Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 43 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 25 जुलाई 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जिसके अंदर से जड़त्व का नाश हो जाता है वह ऊपर की ओर उठ जाता है।

He, who vanishes inertia from within,rises upwards.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

रायपुर में कांग्रेस का विधानसभा घेराव, पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प, चला वाटर कैनन

कानून व्यवस्था, बलौदाबाजार हिंसा सहित कई मुद्दों को लेकर कांग्रेस ने किया जोरदार प्रदर्शन

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ में कानून व्यवस्था, बलौदाबाजार हिंसा, आदिवासी और किसानों सहित कई मुद्दों को लेकर बुधवार को कांग्रेस ने राजधानी रायपुर में प्रदर्शन किया। बुधवार को विधानसभा घेराव करने निकले कांग्रेस नेताओं-कार्यकर्ताओं को पुलिस ने रास्ते में रोक लिया। इस दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच झूमा-झटकी भी हुई पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर वाटर कैनन चलाकर उन्हें रोक दिया।

बता दें कि पूर्व नियोजित कार्यक्रमानुसार बुधवार को कांग्रेस नेता-कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में विधानसभा घेराव के लिए निकले थे। जिसे लेकर प्रशासन की ओर से पूरे विधानसभा मार्ग को छावनी में तब्दील कर दिया गया है। आने-जाने वाले रास्ते पर पुलिस ने 5 लेयर की बैरिकेडिंग की थी। हालांकि बारिश के चलते उक्त प्रदर्शन में ज्यादा संख्या में कार्यकर्ता नहीं पहुंच पाये। घेराव के लिए निकलने से पहले कांग्रेस ने एक जनसभा का आयोजन किया जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल,पूर्व उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव,प्रदेश प्रभारी सचिन पायलेट,प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैजसहित कई कांग्रेस पदाधिकारी मौजूद थे।

सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सचिन पायलट ने कहा- पत्रकार ने मुझसे पूछा कि अभी तो भाजपा सरकार को सिर्फ6 माह हुआ हैं, फिर विधानसभा घेराव की जरूरत क्यों पड़ी। मैंने कहा कि कांग्रेस पार्टी जनता के लिए जीती है, मरती है। जब प्रदेश की सरकार नींद में है, तो उसे जगाने के लिए, उसकी नींद तोडने के लिए ऐसा करना पड़ा। पायलट ने कहा- ये सरकार घमंड में है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर झूठे मुकदमें करती है। अपनी नाकामी छिपाने के लिए, आम जन को परेशान करती है। बलौदाबाजार के लोगों से पूछो, हिंसा

फैलाने कौन लोग आए थे। सूचना तंत्र सो रहा था। ये सरकार रायपुर से नहीं दिल्ली से चलती है। हम हिंसा में विश्वास नहीं करते, जो हिंसा करे उसकी निंदा करते है। लेकिन हम लोगों, किसानों की आवाज उठाते आए हैं।

भूपेश बघेल ने कहा कि जो हमारी सरकार में पांच साल में नहीं हुआ वह साय सरकार ने छह माह में हो गया। उन्होंने पूछा कि विष्णुदेव बताये कि कब कलेक्ट्रेट में आग लगी, कब हमारी सरकार में नक्सली बताकर आदिवासियों को मारा गया। आज बीजेपी के गुंडे कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर कार्रवाई करने दबा बना रहे हैं एवं पुलिस काम करने नहीं दे रहे हैं। बघेल ने कहा कि बलौदाबाजार हिंसा छत्तीसगढ़ के इतिहास में काला धब्बा है।

प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि हमारी लड़ाई बिगड़ती कानून व्यवस्था से है। हमारे लोग विधानसभा में और कार्यकर्ता बाहर लड़ रहे है। बैज ने कहा कि छत्तीसगढ़ में सरकार है या नही जनता को पता भी नही है।

कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच जमकर धक्कामुक्की हुई इस दौरान बेरिकेट्स तोडने के दौरान महापौर एजाज ढेबर ने पुलिस कर्मियों से अभद्रता भी करने लगे वहीं बेरिकेट्स तोडने के चक्कर में घायल हो गये और उनकी तबीयत बिगड़ गई जिसके बाद महापौर को पंडरी के अस्पताल में उपचार के भर्ती कराया गया। प्रदर्शन को देखते हुए प्रशासन ने पहले ही विधानसभा मार्ग के स्कूलों की छुट्टी कर दी थी वहीं मंडी गेट मोवा रोड को शाम पांच बजे तक बंद कर रूट को डायवर्ट कर दिया गया था।

छत्तीसगढ़ विधानसभा के मानसून सत्र के तीसरे दिन स्वास्थ्य विभाग से जुड़े मुद्दे उठाए गए सदन

10 हजार भर्तियां होगी स्वास्थ्य विभाग में : स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ विधानसभा मानसून सत्र के तीसरे दिन स्वास्थ्य विभाग से जुड़े मुद्दे सदन में उठाए गए. इनमें अस्पतालों में डॉक्टरों की कमी, सरकारी डॉक्टरों के प्राइवेट क्लीनिक चलाने और रेफरल को लेकर विधायक भैया लाल राजवाड़े ने प्रश्न किया. स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने प्रदेश में डॉक्टरों और स्टाफ की कमी मानते हुए इस साल 10 हजार मेडिकल स्टाफ की भर्ती की घोषणा सदन में की.

मानसून सत्र के तीसरे दिन विधायक भैया लाल राजवाड़े ने प्रश्न पूछा कि बैकुंठपुर जिला अस्पताल में कितने सेटअप है. कौन कौन से पद रिक्त है कौन भरे हैं. वर्तमान में किन पदों पर स्टाफ की जरूरत है. पिछले 2 साल में कितने मरीज अस्पताल में एडमिट किए गए और कितने मरीज रेफर किए गए.

भैया लाल राजवाड़े के प्रश्न का जवाब देते हुए मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने पहले विधायक भैया लाल राजवाड़े को अपना अभिभावक बताया. आगे उन्होंने कहा कि बैकुंठपुर जिला अस्पताल में 188 पद स्वीकृत है. 111 लोग काम कर रहे हैं. 77 पद खाली है. 98 पद जीवनदीप समिति, डीएमएफ और एनएचएम से भर लिए गए हैं लेकिन विशेषज्ञ डॉक्टरों के 6 पद खाली है और 9 चिकित्सा अधिकारी के पद खाली है. साल 2022-23 में बैकुंठपुर जिला अस्पताल में 19821 मरीज भर्ती हुए. 1410 को रेफर किए गए. इस वित्तीय वर्ष में 5318 मरीज भर्ती हुए. जिसमें से 481 मरीजों को रेफर किया गया. भइया लाल राजवाड़े ने आगे पूछा कि अस्पतालों से रेफरल कब तक खत्म होगा. स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने जवाब दिया कि अस्पतालों में डॉक्टरों की भर्ती जल्द होगी. इस पर विधायक अजय चंद्राकर ने टोका और कहा कि विधानसभा में जो घोषणा की जाती है उन्हें पूरा करना भी जरूरी होता है.

विधायक भैया लाल राजवाड़े ने कहा घरों में कई डॉक्टरों ने दुकान लगा रखी है, जिससे डॉक्टर सिर्फ अपने क्लीनिक में बैठे रहते हैं. अस्पताल में दूसरे शिफ्ट में कोई डॉक्टर ही नहीं रहता. डॉक्टरों की दुकान कब तक बंद होगी. डिलीवरी के लिए 50 हजार रुपये लिए जाते हैं.

स्वास्थ्य मंत्री ने जवाब दिया कि दो प्रकार के डॉक्टर होते हैं. पहले प्रैक्टिशनर होते है और दूसरे नॉन प्रैक्टिश करने वाले डॉक्टर है. महिला चिकित्सा की नियुक्ति की गई थी, सर्जन भी नियुक्त किया गया था लेकिन उन्होंने ज्वाइन नहीं किया. 15 दिन के अंदर जल्द से जल्द महिला डॉक्टर और एनेसथीसिया के डॉक्टरों की भर्ती होगी. 15 दिन के अंदर महिला डॉक्टर और एनेसथीसिया के डॉक्टर की भर्ती होगी.

नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री ने विधायक को अपना गुरु बताया तो क्या ये मामला कोरिया जिले में ही रहकर इस मामले को क्यों नहीं सुलझाया गया. इस पर विधानसभा अध्यक्ष रमन सिंह ने भी कहा कि यहां तक मामला नहीं आना चाहिए.

विधायक धरमजीत ने कहा कि पूरे प्रदेश में डॉक्टरों की कमी बनी हुई है. बड़े बड़े लोगों के बच्चे बॉन्ड भरकर सरकारी खर्चे में डॉक्टर बन जाते हैं और फिर पैसे पटा कर छोड़ देते हैं. इस पर कड़ा निर्णय की जरूरत है. मंत्री ने जवाब दिया कि 1079 डॉक्टरों की विशेषज्ञ और मेडिकल अफसरों की भर्ती प्रक्रिया शुरू हो गई है. 8084 स्टाफ नर्स और भृत्य की भर्ती की जा रही है. 232 प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और एसोसियोटेट प्रोफेसर की भर्ती के लिए पीएससी को भेज दिया गया है. इस साल 10 हजार मेडिकल स्टाफ की भर्ती की तैयारी है.

नक्सल एनकाउंटर के मुद्दे पर पक्ष-विपक्ष में तीखी नोंकझोंक

छत्तीसगढ़ विधानसभा में बुधवार को नेता प्रतिपक्ष चरण दास महंत ने नक्सल क्षेत्र में तैनात पुलिसकर्मियों पर बड़ा आरोप लगा दिया। महंत ने कहा कि पुलिस वाले भरमार बंदूक ले जाकर आम लोगों के सामने रख देते हैं, और उन्हें नक्सली बताकर मार देते हैं। दरअसल नेता प्रतिपक्ष महंत ने नक्सल क्षेत्रों में आम नागरिकों की मौत के संबंध में सवाल पूछा था। उनहोंने पूछा था कि, पिछले छह महीने में कितने आम नागरिकों को नक्सलियों ने मारा। नेता प्रतिपक्ष के सवाल पर जवाब देते हुए गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा- छह महीने में 19 जवान शहीद हुए, 88 जवान घायल हुए। छह महीने में 34 आम नागरिकों को नक्सलियों ने मारा। उन्होंने बताया कि, इनमें से 4 को जन अदालत में मारा गया, 6 आईडी ब्लास्ट में, 24 लोगों की मुखबिरी के शक में हत्या की गई। इसके बाद नेता प्रतिपक्ष महंत ने कहा- मारे गए नक्सलियो में कितने इनामी नक्सली थे, कितने बाहरी थे। तब गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा- 137 नक्सलियों पर इनाम था। तब फिर से महंत ने पूछा कि, अब तक कितने बन्दूक जब्त हुए, कितने चलते हैं, भरमार बन्दूक से फायरिंग होते देखे हैं। उन्होंने बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि, पुलिस वाले आम लोगों के सामने भरमार बन्दूक लेकर रख देते हैं और उन्हें नक्सली बता देते हैं। जाँच कराएंगे क्या, भरमार बन्दूक चलने लायक है या नहीं। इस पर गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि, कोई मर गया उसके पास बंदूक रखकर फोटो खिंचा लेना उचित नहीं है। यह आशंका भी गलत है, नक्सलियों के पास एके 47 भी बरामद हुए हैं। इस पर विधायक विक्रम मण्डावी ने कहा- पीडिया गाँव में 10 निर्दोष ग्रामीणों को मारा गया। विक्रम मंडावी के इस आरोप पर गृह मंत्री ने कहा- इस तरह के आरोप लगाकर सुरक्षा बलों का मनोबल मत तोड़िए। इस पर सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच जमकर नारेबाजी होने लगी।

किसी भी राज्य के साथ भेदभाव नहीं किया गया है : निर्मला सीतारमण

नई दिल्ली (आरएनएस)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आम बजट आवंटन में राज्यों के साथ भेदभाव किये जाने के विपक्ष विशेषकर कांग्रेस के आरोपों को खारिज करते हुये बुधवार को कहा कि इसमें किसी भी राज्य के साथ भेदभाव नहीं किया गया है और बजट भाषण में सभी राज्यों का नाम नहीं लिया जाता है, लेकिन बजट दस्तावेजों में सभी राज्यों के आवंटन का उल्लेख होता है।

सीतारमण ने संवाददाताओं से अनौपचारिक चर्चा में इस संबंध में पूछे जाने पर कांग्रेस को चुनौती देते हुये कहा कि देश में सबसे अधिक बजट पेश करने वाली पार्टी अपने पूर्ववर्ती वित्त मंत्रियों के बजट भाषण को पढ़कर देखे कि क्या उसमें सभी राज्यों के नाम का उल्लेख किया गया है। उन्होंने कांग्रेस पर बजट को लेकर लोगों में भ्रम फैलाने और गलत जानकारी देने का आरोप लगाते हुये कहा कि बजट को लेकर राज्यसभा में सदन के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने जो आज किया है वह उनके लंबे राजनीतिक जीवन को देखते हुये उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि बजट भाषण में नाम का उल्लेख हो या नहीं हो, लेकिन बजट दस्तावेज में राज्यवार आवंटन का उल्लेख होता ही है।

उन्होंने कहा कि बजट दस्तावेज में एक-एक रुपया का हिसाब होता है और कहां से आया तथा कहां गया का विस्तार से जिक्र होता है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के लिए अभी डेढ़ महीने पहले ही प्रधानमंत्री ने 26 हजार करोड़ की परियोजनाओं की शुरूआत की है जिससे करीब चार लाख रोजगार सृजित होने का अनुमान है। वित्त मंत्री ने कहा कि केन्द्र प्रायोजित सभी परियोजनायें सभी राज्यों के लिए होती है। इसके आवंटन का लाभ सभी राज्यों को मिलता है और यह राज्यों पर निर्भर करता है कि वह अपने हिस्से का कितना उपयोग कर पाता है। बिहार और आंध्र प्रदेश को विशेष आवंटन के बारे पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश की कोलावरम परियोजना राष्ट्रीय परियोजना है।

काठमांडू में टेक ऑफ के दौरान यात्री विमान क्रैश, लगी आग

उड़ान भरते ही विमान में झटका लगा

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल के काठमांडू में एक बड़ा हादसा हुआ है। त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बुधवार को टेक ऑफ़ के दौरान सौर्य एयरलाइंस का एक विमान क्रैश हो गया है।

द काठमांडू पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक पोखरा जाने वाले विमान में एयरक्रू सहित 19 लोग सवार थे। यह हादसा करीब 11 बजे हुआ। पुलिस और अग्निशमन दल दुर्घटनास्थल पर पहुंच गए हैं। बचाव और राहत कार्य शुरू कर दिया गया है। इस हादसे में विमान के परखच्चे उड़ गए हैं और यात्रियों के बचने की संभावना कम नजर आ रही है। घटनास्थल से सामने आई वीडियो में इस बात की पुष्टि हुई है।

जानकारी के मुताबिक प्लेन सौर्य एयरलाइंस का था. प्रारंभिक रिपोर्ट्स से पता चलता है कि विमान टेक ऑफ के दौरान रनवे पर फिसल गया, जिसके कारण यह हादसा हुआ.

फिलहाल रेस्क्यू टीम की कोशिश है कि जल्द से जल्द आग बुझाई जाए, ताकि उसमें सवार यात्रियों के बारे में जानकारी मिल सके.

संसद परिसर में इंडी गठबंधन का विरोध प्रदर्शन, बजट को बताया भेदभावपूर्ण

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला पूर्ण बजट मंगलवार को पेश किया। इस बजट में आंध्र प्रदेश और बिहार को सौगात दी गई। विपक्ष ने लामबंद हो इसे पक्षपात पूर्ण रवैया करार दिया है।

पूर्ण बजट 2024 में अन्य राज्यों की अनदेखी को लेकर इंडी गठबंधन ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। संसद परिसर में बुधवार को इंडी गठबंधन के नेताओं ने बजट में भेदभाव किए जाने को लेकर विरोध-प्रदर्शन किया।

इस प्रदर्शन में कांग्रेस की संसदीय दल प्रमुख सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव समेत विपक्षी दलों के कई नेता मौजूद रहे। इन्होंने हाथों में डिमांड करती तख्तियां पकड़ रखी थीं। जिसमें लिखा था कि एनडीए ने इंडिया को नजरअंदाज किया। भारतीय राज्यों को उनका हक दें। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि इस बजट से कोई खुश नहीं है। ये सिर्फ सरकार बचाओ बजट है। यह बजट सिर्फ अपने सहयोगियों को संतुष्ट करने के लिए है।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट संसद में पेश किया। वर्ष 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने के पीएम मोदी के लक्ष्य को सामने रखते हुए सीतारमण ने लोकसभा में 84 मिनट तक अपना बजट भाषण पढ़ा। प्रधानमंत्री मोदी ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के 84 मिनट के बजट भाषण के दौरान लगभग 78 बार मेज थपथपाकर बजट घोषणाओं का स्वागत किया।

विष्णु के सुशासन दिख रहा धरातल पर जहाँ एक कॉल से हो रहा समस्या का निराकरण

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के सुशासन धरातल पर दिखने लगे हैं जहाँ मात्र एक फोन कॉल पर समस्याओं का त्वरित निराकरण हो रहा है। जिला प्रशासन द्वारा शुरू किए गए जनसमस्या निवारण कॉल सेंटर में मोतीनगर के रहवासी आवारा कुत्तो से परेशान थे, नागरिकों ने आवारा कुत्तो से कोई अनहोनी न हो, इसके पूर्व कॉल सेंटर में फोन घुमाया। इसके तुरंत बाद शिकायत दर्ज कर निगम के अधिकारियों को तुरंत जानकारी दी गई। इसके तत्पश्चात निगम के कर्मचारी मौके के लिए रवाना हुए।कॉलोनी में आवारा कुत्तो को डॉग कैचर के सहायता से पकड़ा लिया गया जिन्हे नसबंदी कर के अन्यत्र स्थान पर छोड़ दिया जाएगा। इस त्वरित कार्य की नागरिकों ने सराहाना की एवं मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय तथा कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह को धन्यवाद दिया।

राज्य मंत्री तोखन साहू ने केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से की मुलाकात

महामाया मंदिर को 'प्रसाद' योजना में शामिल करने और उन्नयन के लिए विशेष कॉरिडोर बनाने की मांग

नई दिल्ली/रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू ने केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के समक्ष बिलासपुर जिले के रतनपुर में स्थित महामाया मंदिर को 'प्रसाद' योजना में शामिल करने और उन्नयन के लिए विशेष कॉरिडोर बनाने की मांग की है।

बता दें कि वर्तमान में रतनपुर एक छोटा नगर है, जो मंदिरों और तालाबों के लिए विख्यात है. यह जिला मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित है. यहां स्थित प्राचीन महामाया मंदिर का निर्माण राजा रत्नदेव प्रथम द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी में कराया गया था. ऐतिहासिक, धार्मिक और पर्यटन की दृष्टि से यह देश और प्रदेश के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है।

यहां हर वर्ष लगभग 15 लाख से अधिक श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। वर्तमान बिलासपुर सांसद और आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू ने जनहित में महामाया मंदिर की महत्ता और छत्तीसगढ़ राज्य के करोड़ों लोगों की आस्था का सम्मान करते हुए भारत सरकार की तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान (प्रसाद) योजना के तहत इस मंदिर के विकास के लिए केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से मुलाकात की। इस योजना के तहत महामाया मंदिर का विकास होने से देश-विदेश से आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि होगी, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का सृजन होगा. राज्य मंत्री तोखन साहू ने इस विषय में पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से सार्थक प्रयास करने का आश्वासन प्राप्त किया. बिलासपुर सांसद और आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू ने बिलासपुर की जनता की ओर से उनका आभार व्यक्त किया।

बिहार विधानसभा में आरक्षण पर विपक्षी सदस्यों ने किया हंगामा, भड़के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा के मानसून सत्र के तीसरे दिन बुधवार को भी विपक्षी सदस्यों ने जोरदार हंगामा किया। विपक्ष के सदस्य आरक्षण को संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग कर रहे थे।

हंगामा के बीच, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने खड़े होकर कहा कि आपकी जो भी मांग है वह पहले ही पूरी हो चुकी है, इस पर हंगामा करने का कोई मतलब नहीं है। विधानसभा की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्षी सदस्य वेल में पहुंच गए। विधानसभा अध्यक्ष नन्द किशोर यादव बार-बार उन्हें अपनी जगह पर जाकर बात कहने का आग्रह करते रहे। लेकिन, विपक्ष हंगामा करता रहा।

इस दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने खड़े होकर कहा कि सरकार ने पहले ही जातीय गणना के बाद आरक्षण की सीमा को बढ़ा दिया है। इस पर पटना उच्च न्यायालय ने रोक लगा दी है। उच्च न्यायालय के फैसले के विरोध में सरकार सुप्रीम कोर्ट पहुंची है। इसे नौवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए भी सरकार द्वारा केंद्र सरकार को लिखा जा चुका है। इसके बाद इस मामले को लेकर हंगामे का कोई मतलब नहीं है।

उन्होंने कहा कि जाति आधारित गणना के बाद 94 लाख गरीबों की पहचान की गई है। उनके विकास के लिए सरकार ने दो-दो लाख रुपया देना शुरू कर दिया। इस दौरान, मुख्यमंत्री भड़कते भी दिखे। उन्होंने एक महिला विधायक को कहा कि महिला हो, कुछ जानती हो? कहां से आते हैं, इन लोगों ने कुछ किया है? 2005 के बाद महिला को हमने ही आगे बढ़ाया है।

विपक्ष के विरोध पर संसदीय कार्य मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि बिहार सरकार ने बढ़ाए गए आरक्षण को नौवीं अनुसूची में शामिल करने को लेकर पहले ही प्रस्ताव भेज दिया है। उन्होंने कहा कि आप लोग सिर्फ सिम्पैथी लेना चाहते हैं।

वहीं सदन में विपक्षी विधायकों के हाय हाय के नारे लगाए जाने पर नीतीश कुमार खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि आप सब हाय हाय हैं। अगर हमारी बात नहीं सुननी है तो यह आपकी गलती है। हंगामा होता देख कर विधानसभा अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही को दो बजे दिन तक के लिए स्थगित कर दिया।

राहुल गांधी ने संसद में बुलाए किसान, एंट्री नहीं मिल पा रही थी तो भड़क गए

नई दिल्ली (आरएनएस)। बजट को लेकर संसद में विपक्षी पार्टियों की तरफ से खूब हंगामा किया जा रहा है। वहीं लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने कई किसान नेताओं को मिलने के लिए संसद में बुला लिया। बुधवार को संसद भवन पहुंचे इन किसान नेताओं को एंट्री नहीं मिली तो राहुल गांधी भड़क गए। इस मौके राहुल गांधी ने कहा कि हमने इन लोगों को मुलाकात के लिए बुलाया था। लेकिन ये लोग संसद में उन्हें आने नहीं दे रहे हैं। ऐसा शायद इसलिए हो रहा है क्योंकि वे किसान हैं और उन्हें सरकार अंदर नहीं देखना चाहती। वहीं राहुल गांधी के ऐतराज के बाद उन्हें एंट्री मिल गई। अब किसान नेताओं से राहुल गांधी संसद भवन के अपने उस दफ्तर में मिल सकेंगे, जो उन्हें नेता विपक्ष के तौर पर मिला है। किसान नेताओं को एंट्री न मिलने के आरोपों पर मीडिया ने पूछा तो राहुल गांधी ने कहा कि यह बात तो आपको नरेंद्र मोदी ही बता पाएंगे।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, गुरुवार 25 जुलाई 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

महिलाओं के लिए 3 लाख करोड़ के प्रावधान करना मोदी सरकार का ऐतिहासिक कदम: सुनीता वर्मा

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। पूर्व जनपद सभापति व भाजपा जिला मंत्री श्रीमती सुनीता वर्मा ने केंद्र सरकार के प्रस्तुत बजट को

नारी सशक्तीकरण का प्रतिबिम्ब बताया। श्रीमती वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने अपने पिछले दो कार्यकाल में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तीकरण की जिस संकल्पना को धरातल पर उतारा है, अपने तीसरे कार्यकाल के पहले पूर्ण बजट में उसी संकल्पना को व्यापकता भी प्रदान की है। श्रीमती वर्मा ने कहा कि केंद्र की राजग सरकार ने अपने प्रस्तुत बजट में महिलाओं के उत्थान के लिए तीन लाख करोड़ रुपए का प्रावधान करके नारी उत्थान की अपनी प्रतिबद्धता को साकार करने एक मजबूत पहल किया है। श्रीमती वर्मा ने कहा कि मोदी- सरकार की नारी उत्थान की प्रतिबद्धता देशभर की मातृशक्ति को नई ऊर्जा और नए विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी, अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में भी महिलाओं के लिए अर्थोपार्जन के अवसर पैदा करने के लिए मोदी सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है जो स्वागत योग्य कदम है।

जिले में विशेषीकृत दत्तक ग्रहण एजेन्सी की स्थापना हेतु इच्छुक पंजीकृत अशासकीय संस्थाएं/स्वैच्छिक संगठन से आवेदन आमंत्रित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम 2015 यथा संशोधित 2021 की धारा 41 के प्रावधानों के तहत् जिलें में प्राप्त होने वाले देखरेख और संरक्षण की आवश्यकता वाले 06 वर्ष से कम आयु के बालकों यथा अनाथ, बेसहारा, परित्यक्त, अभ्यर्पित, बाल तस्करी से पीड़ित शोषण के शिकार, सड़क पर रहने वाले आदि बालकों को संरक्षण प्रदान करने के लिए जिले में बाल देखरेख संस्था यथा 10 बच्चों की क्षमता वाली विशिष्ट दत्तक ग्रहण अभिकरण के संचालन के इच्छुक अनुभवी एवं योग्य अशासकीय संस्था /संगठन हेतु राज्य स्तर से आवेदन पत्र आमंत्रित किये गए है। आवेदन की अंतिम तिथि 6 अगस्त 2024 है। इच्छुक अशासकीय संस्था/संगठन द्वारा निर्धारित प्रारूप 27 में आवेदन जिला कार्यकम अधिकारी महिला एवं बाल विकास कलेक्ट्रेट के कक्ष कमांक 97 पर पंजीकृत डाक / स्पीड पोस्ट / कोरियर से प्रेषित किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए www.cgwcd.gov.in एवं www.cg.state.gov.in में उपलब्ध है।

'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत जय हरीतिमा महिला समिति की सदस्यों ने रोपे कटहल और चम्पा के पौधे

रायपुर (विश्व परिवार)। 'एक पेड़ माँ के नाम' वृक्षारोपण अभियान के तहत जय हरीतिमा महिला समिति, कृषक नगर, रायपुर द्वारा इंदिरा

गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। समिति की अध्यक्ष श्रीमती ममता चंदेल ने एक कटहल और एक चम्पा का पौधा लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। समिति की अन्य सदस्यों ने भी कटहल और चम्पा के पौधे रोपित किये। समिति की अध्यक्ष श्रीमती चंदेल ने इस अवसर पर रोपित पौधों की देखभाल एवं सुरक्षा का आव्हान करते हुए समिति की सदस्यों को इसका संकल्प दिलवाया। इस अवसर पर वेस्ट मटेरियल से पॉट डेकोरेशन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। समिति की सदस्य महिलाओं ने प्रतियोगिता में वेस्ट मटेरियल से बनाए गए सुंदर-सजीले पॉट्स का प्रदर्शन किया। पॉट डेकोरेशन प्रतियोगिता की विनर डॉ. सविता तिवारी रहीं। श्रीमती जागृति राणा और श्रीमती निशा वर्मा को संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ, जबकि श्रीमती प्रकृति श्रीवास्तव और श्रीमती सपना वर्मा संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहीं। इस अवसर पर समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती तृप्ति शर्मा, सचिव श्रीमती ज्योति वर्मा, कोषाध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) ज्योति भट्ट, सहसचिव श्रीमती कनक खोखर, खेल प्रभारी प्रकृति श्रीवास्तव सहित सभी कार्यकारिणी सदस्याएं मौजूद थीं। वृक्षारोपण कार्यक्रम को सुचारू रूप से संपन्न करने में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. हेमन्त पाणिग्रही तथा डॉ. जी.एल. शर्मा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

साय सरकार का विधानसभा में प्रथम अनुपूरक पारित

वर्ष 2024-25 के लिए प्रथम अनुपूरक में 7 हजार 329 करोड़ रूपए का प्रावधान

- महतारी वंदन योजना, नियद नेल्लानार, पीएम जनमन योजना के साथ ही खेल सुविधाओं के लिए प्रावधान शामिल, मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा पुनः होगी शुरू
- छत्तीसगढ़ का बजट का आकार बढ़कर हुआ 01 लाख 54 हजार 775 करोड़ रूपए

रायपुर (आरएनएस)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की सरकार का विधानसभा में प्रथम अनुपूरक ध्वनिमत से पारित हुआ। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए प्रस्तुत किए गए 7 हजार 329 करोड़ रूपए के प्रथम अनुपूरक में महतारी वंदन योजना, लोकनायक जयप्रकाश सम्मान निधि, नियद नेल्लानार, पीएम जनमन योजना के साथ ही खेल सुविधाओं, आंगनबाड़ी भवन, देवगुड़ियों के निर्माण उन्नयन, इन्क्यूबवेशन सेंटर की स्थापना सहित अनेक विकास कार्यों के लिए प्रावधान रखे गए हैं। मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना पुनः शुरू की जा रही है, इसके लिए भी बजट प्रावधान रखा गया है।

साय सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने छत्तीसगढ़ विजन (अमृतकाल 2047) को दृष्टिगत रखते हुए अनुपूरक बजट विधानसभा में प्रस्तुत किया, जिसे विस्तृत चर्चा के पश्चात ध्वनिमत से पारित किया गया। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने विधानसभा में अनुपूरक बजट में चर्चा के दौरान बताया कि वर्ष 2024-25 के मुख्य बजट में व्यय का प्रावधान - 1 लाख 47 हजार 446 करोड़ तथा प्रथम अनुपूरक 7 हजार 329 करोड़ रूपए को मिलाकर अब बजट का आकार 01 लाख 54 हजार 775 करोड़ रूपए हो गया है। प्रथम अनुपूरक में राजस्व व्यय - 6 हजार 825 करोड़, पूंजीगत व्यय - 504 करोड़, कुल व्यय - 7 हजार 329 करोड़ है।

वित्त मंत्री श्री चौधरी ने कहा कि राज्य में महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन एवं सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए संचालित की जा रही है। महतारी वंदन योजना के लिए प्रथम अनुपूरक में 4 हजार 900 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। राज्य के लोकतंत्र सेनानियों (मीसाबंदियों) को लोकनायक जयप्रकाश नारायण सम्मान निधि अंतर्गत 42 करोड़ का आकस्मिकता निधि अग्रिम स्वीकृत करते हुए भुगतान किया गया है। अग्रिम की प्रतिपूर्ति हेतु प्रथम अनुपूरक में 42 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री ने बताया कि राज्य के बस्तर क्षेत्र में वामपंथ उग्रवाद से अधिक प्रभावित 5 जिलों- दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर, नारायणपुर एवं कांकेर के गांवों में अंतिम छोर तक विकास सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नियद नेल्लानार - आपका अच्छा गांव योजना अंतर्गत 53 सीआरपीएफ कैंपों के निर्माण एवं क्षेत्र के समग्र विकास हेतु प्रथम अनुपूरक में 5 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इन क्षेत्रों में खेल सुविधाओं के विकास हेतु 2 करोड़ का प्रावधान किया गया है। 18 नवीन प्राथमिक शाला खोले जाने हेतु प्रथम अनुपूरक में 1 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। 02 नवीन छात्रावास एवं 12 छात्रावासों में सीट वृद्धि हेतु प्रथम अनुपूरक में 88 लाख का प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री ने कहा कि देश के सभी आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में पीवीटीजी के समग्र विकास हेतु चलाई जा रही प्रधानमंत्री जनमन योजना तहत राज्य में विशेष रूप से पिछड़ी जनजाति समूह के परिवारों एवं बसाहटों के विकास हेतु बहुउद्देश्यीय केन्द्रों के निर्माण के लिये प्रथम अनुपूरक में 20 करोड़ का प्रावधान है। इन क्षेत्रों में 57 मोबाईल मेडिकल यूनिट के संचालन हेतु अनुपूरक में 2 करोड़ 72 लाख का प्रावधान है। पीव्हीटीजी बसाहटों के विद्युतीकरण हेतु अनुपूरक बजट में 3 करोड़ 76 लाख का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री ने कहा कि राज्य में ग्रीन ट्रांसपोर्ट को बढ़ावा देने हेतु ई-बस सेवा योजना अंतर्गत रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर एवं कोरबा हेतु कुल 240 बसों के इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, जिसकी अनुमानित लागत 66 करोड़ है, के लिए प्रथम अनुपूरक में 40 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य इलेक्ट्रिक वाहन नीति के तहत इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीदी को प्रोत्साहित करने के लिए लोगों को सब्सिडी प्रदाय करने हेतु वर्ष 2024-25 के मुख्य बजट में 30 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इस योजना को लोगों का अच्छा प्रतिसाद मिला है। अतः योजना में अतिरिक्त आवश्यकता को देखते हुए प्रथम अनुपूरक में 20 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान रखा गया है। वित्त मंत्री ने कहा कि राज्य में सड़कों के अनुरक्षण एवं संधारण हेतु 150 करोड़ का प्रावधान प्रथम अनुपूरक में किया गया है। प्रदेश में 3 हजार 352 आंगनबाड़ी भवनों के निर्माण हेतु प्रथम अनुपूरक में 50 करोड़ का प्रावधान रखा गया है। ग्रामीण क्षेत्र में सभी आंगनबाड़ियों के भवन स्वीकृत हो गये हैं। लोक निर्माण विभाग के विश्राम भवनों, ट्रांजिट हॉस्टल एवं कार्यालय भवनों में ऑनग्रिड सोलर प्लांट की स्थापना एवं अनुरक्षण कार्य हेतु प्रथम अनुपूरक में 5 करोड़ का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री ग्राम सड़क एवं विकास योजना अंतर्गत मुख्य बजट में 94 करोड़ 38 लाख का प्रावधान है। ग्रामीण क्षेत्रों में 67 नवीन सड़कों के निर्माण कार्य, जिनकी अनुमानित लागत 170 करोड़ है, के लिए प्रथम अनुपूरक में 25 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री ने कहा कि वन प्रबंधन समितियों को बांस कूपों एवं काष्ठ कूपों के विदोहन से प्राप्त होने वाले वनोपज के मूल्य का लाभांश वितरण हेतु 31 करोड़ का प्रावधान किया गया है। बिगड़े वनों के सुधार एवं बांस वनों के सुधार हेतु 25 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। कानन पेण्डारी जूलॉजिकल गार्डन बिलासपुर में वन्यप्राणियों की खाद्य सामग्री हेतु 10 करोड़ का प्रावधान किया गया है। 27वीं अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित करने हेतु 7 करोड़ 50 लाख का प्रावधान किया गया है। तेन्दूपत्ता संग्राहक परिवारों को चरणपादुका प्रदाय करने हेतु 5 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री ने कहा कि मिलेट उत्पादों के प्रचार-प्रसार एवं विकास कार्यों के लिए 5 करोड़ का प्रावधान किया गया है। संयुक्त वन प्रबंधन का सुदृढ़ीकरण एवं विकास योजना अंतर्गत देवगुड़ियों के निर्माण, उन्नयन एवं संरक्षण हेतु 3 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। राज्य में लाख उत्पादन में वृद्धि तथा उत्पादित लाख प्रसंस्करण आदि को बढ़ावा देकर कृषकों के आय में वृद्धि करने हेतु केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण, अनुसंधान एवं क्षमता विकास कार्य के लिए 1 करोड़ का प्रावधान किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य जलवायु परिवर्तन केन्द्र के उन्नयन एवं सुदृढ़ीकरण हेतु 2 करोड़ 50 लाख का प्रावधान किया गया है।

हमारी सरकार के पिछले कार्यकाल में प्रारंभ की गयी मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना, जिसे पिछली सरकार द्वारा बंद कर दिया गया था, को पुनः प्रारंभ किया गया है। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगों को देश के प्रमुख तीर्थों की यात्रा कराने हेतु अनुपूरक में 25 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

राज्य की नदियों, नालों को प्रदूषण से बचाने हेतु सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाकर जल को उपचारित कर शुद्ध बनाने के लिये 260 करोड़ का प्रावधान किया गया है। प्रदेश में साईंस सिटी की स्थापना हेतु 36 करोड़ 81 लाख का प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री ने नालंदा परिसर की तर्ज पर 13 नगरीय निकायों में लाइब्रेरी की दी सौगात

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के नालंदा परिसर की तर्ज पर प्रदेश के 13 नगरीय निकायों में लाइब्रेरी निर्माण के प्रस्ताव को वित्त विभाग से हरी झंडी मिल गई है। लाइब्रेरी को नॉलेज बेस्ड सोसायटी यानी ज्ञान आधारित समाज" के प्रतीक के रूप में प्रदेश के अलग-अलग स्थानों में स्थापित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के तैयारी के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराने संकल्पित है। उन्होंने आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित लाइब्रेरी की सौगात दी है, जिसका लाभ युवाओं को मिलेगा। उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे प्रदेश के युवाओं को बड़ी सौगात मिलने जा रही है। वित्त विभाग ने रायपुर के नालंदा परिसर की तर्ज पर प्रदेश के 13 नगरीय निकायों में लाइब्रेरी के लिए 85 करोड़ 42 लाख रुपए से अधिक की राशि स्वीकृत की है। प्रदेश के 4 नगरीय निकायों में 500 सीटर और 9 नगरीय निकायों में 200 सीटर लाइब्रेरी का निर्माण किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि यह उन विद्यार्थियों के लिए लाभदायक होगा, जो छोटे शहरों में रहकर उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाई करना चाहते हैं या फिर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। लाइब्रेरी निर्माण का मुख्य उद्देश्य स्थानीय युवाओं के शैक्षिक और सांस्कृतिक विकास को सुनिश्चित करना है। वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने अपने मुख्य बजट भाषण में भी इसका जिक्र किया था।

दिव्यांगजनों के लिए उपयुक्तता प्रमाण-पत्र बनाने राज्य स्तरीय शिविर 25 जुलाई को रायपुर में

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। दिव्यांगजनों को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए उपयुक्तता प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना जरूरी होता है। छत्तीसगढ़ राज्य के दिव्यांगजनों को इस प्रमाण-पत्र के लिए जबलपुर जाना होता है। राज्य के शिक्षित दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए भारत सरकार श्रम मंत्रालय के नेशनल कैरियर सेंटर फॉर डिफरेंटली एबल्ड जबलपुर एवं विशेष रोजगार कार्यालय (दिव्यांगजनों हेतु नियोजित) रायपुर के संयुक्त तत्वाधान में दिव्यांगजनों को उपयुक्तता प्रमाण-पत्र (सूटेबिलिटी सर्टिफिकेट) प्रदान करने के लिए दिनांक 25 जुलाई गुरूवार को एक दिवसीय शिविर का आयोजन सवेरे 10 बजे से सह शिक्षा पॉलिटेक्निक कॉलेज, बैरन बाजार रायपुर में किया जा रहा है। पीईटी/पीएटी/प्री एमसीए./प्री. बीएससी नर्सिंग/प्री एमएससी नर्सिंग/प्री बीएड आदि प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से व्यवसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु उपयुक्तता प्रमाण-पत्र आवश्यक जमा करना होता है। रायपुर में आयोजित इस शिविर में दिव्यांगता का परीक्षण कर पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु उपयुक्तता की जाँच कर उपयुक्तता प्रमाण-पत्र जारी किया जायेगा। शिविर में भाग लेने हेतु दिव्यांग अभ्यर्थी को जिला चिकित्सा बोर्ड द्वारा जारी दिव्यांगता प्रमाण-पत्र, शिक्षा एवं आयु से संबंधित प्रमाण-पत्र, आधार कार्ड, मोबाईल नंबर, आरक्षित वर्ग के लिए जाति प्रमाण-पत्र, पासपोर्ट आकार के 2 नग फोटो तथा यदि व्यापम द्वारा आयोजित किसी प्रवेश परीक्षा में शामिल हुआ हो तो उसका प्रवेश पत्र साथ में लाना अनिवार्य है। शिविर में आने-जाने हेतु किसी प्रकार का मार्गव्यय देय नहीं होगा। इस शिविर के संबंध में अधिक जानकारी के लिए कार्यालयीन समय में दूरभाष नंबर 0771-4044081 पर संपर्क कर सकते हैं।

नाबालिग छात्रा से भवन निर्माण का कार्य, शिक्षक निलंबित

कोंडागांव (विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कुणाल दुदावत की अनुशंसा पर लोक शिक्षण संचालक द्वारा नाबालिग छात्रा से भवन निर्माण का कार्य कराने वाले शिक्षक विनोद शार्दुल को निलंबित कर दिया है। मूलतः शासकीय हाईस्कूल पल्ली में व्याख्याता (एल.एबी.) तथा वर्तमान में प्राचार्य के प्रभार पर पदस्थ विनोद शार्दुल को निलंबित कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि विनोद कुमार शार्दुल द्वारा 07 जुलाई को कक्षा दसवीं में अध्ययनरत छात्रा कु. लखेश्वरी मानिकपुरी एवं कु. इस्ती नेताम को अपनी मोटरसायकल से ग्राम सितली से कोण्डागांव निर्माणधीन भवन में कार्य करने के लिए लाया गया। निर्माणधीन भवन के ऊपर से गिरने के कारण छात्रा कु. लखेश्वरी मानिकपुरी की मृत्यु हो गई। संस्था प्रमुख होने के नाते शाला के छात्र-छात्राओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी श्री शार्दुल की है, पर उन्होंने शाला की नाबालिग छात्राओं से जोखिम भरा कार्य कराया, जिसके कारण छात्रा कु. लखेश्वरी मानिकपुरी की मृत्यु हो गई। श्री शार्दुल द्वारा उक्त घटना की लिखित अथवा मौखिक सूचना अपने उच्च अधिकारियों को भी नहीं दी गई।

विनोद कुमार शार्दुल के इस कृत्य को बालक और कुमार श्रम (प्रतिशेध और विनियमन) अधिनियम, 1986 के धारा-3, । की उपधारा पप एवं छ.ग. सिविल सेवा (आचरण) नियम, 1965 के नियम-3 के विपरीत पाते हुए कलेक्टर श्री दुदावत द्वारा श्री शार्दुल के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही किये जाने की अनुशंसा पर यह कार्यवाही की गई। इसके साथ ही विनोद कुमार शार्दुल के विरुद्ध इस मामले में एफआईआर भी दर्ज कराया गया है।

छ.ग. सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण तथा अपील) नियम 1966 के नियम 9 के उपनियम (1) के अन्तर्गत श्री विनोद कुमार शार्दुल, प्रभारी प्राचार्य (मूल पद व्याख्याता एल.एबी.), शा. हाईस्कूल, पल्ली, विकासखण्ड व जिला कोण्डागांव को तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए इनका मुख्यालय, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, जिला कोण्डागांव निर्धारित किया गया है।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर कॉलोनी,** रायपुर में निर्मित **एम.आई.जी.-II भवन योजना** के अंतर्गत भवनों में से भूखण्ड/ भवन क्रमांक **एम.आई.जी.-II -143 श्री विजेन्द्र सिंह ठाकुर पिता- शिव कुमार सिंह ठाकुर** को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **01.08.2006** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **18.07.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्रीमती शारदा कुमारी पाण्डेय पति- श्री रंजीत उपाध्याय** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के **विक्रय के संबंध में** किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के **15 दिन** के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

**सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर**

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि मण्डल द्वारा निर्मित अटल आवास **गातापार,** रायपुर में **भवन क्रमांक -07, श्रीमति माधुरी भारद्वाज, पति- श्री टुमन लाल भारद्वाज,** के नाम स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन के मद मे पूर्ण राशि जमा कर पंजीयन कार्यालय रायपुर से दिनांक **14.09.2016** को लीजडीड (पट्टा-विलेख) का निष्पादन करा कर आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में **श्रीमति माधुरी भारद्वाज, पति- श्री टुमन लाल भारद्वाज,** निवासी- एम.आई.जी.-26, सेक्टर-04, पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर रायपुर, तहसील व जिला-रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्री तीरथ कुमार ढीमर पिता श्री भुवन लाल ढीमर,** निवासी- वार्ड नं.- 10, विवेकानंद वार्ड कुरूद, तहसील- कुरूद, जिला- धमतरी (छ.ग.) को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र **(एन.ओ.सी)** प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अटल आवास गातापार, रायपुर में भवन क्रमांक-07, के **विक्रय के सबंध में** किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अद्योहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

**सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर**

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 288 दिनांक 24.07.2024
वार्ड का नाम- माधव राव सप्रे वार्ड
वार्ड क्र. 19 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 19 मांग **पंजी क्र. 938 युआईडी 37866** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **अविनाश बिल्डर्स/ आनंद सिंघानिया** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सविता मिश्रा/ यु.एस. मिश्रा** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **23-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 293 दिनांक 24.07.2024
वार्ड का नाम- गोवर्धन वार्ड
वार्ड क्र. 14 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 14 मांग **पंजी क्र. 359 युआईडी 18482** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जगमोहन सतनामी/ फिरता** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सुनील कोशले/ स्व. जगमोहन कोशले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **23-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 292 दिनांक 24.07.2024
वार्ड का नाम- गोवर्धन वार्ड
वार्ड क्र. 14 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 14 मांग **पंजी क्र. 359 युआईडी 18482** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जगमोहन सतनामी/ फिरता** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **अश्वनी/ स्व. जगमोहन कोशले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **23-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 291 दिनांक 24.07.2024
वार्ड का नाम- गोवर्धन वार्ड
वार्ड क्र. 14 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 14 मांग **पंजी क्र. 359 युआईडी 18482** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जगमोहन सतनामी/ फिरता** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सोनसाय कोशले/ स्व. जगमोहन कोशले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **23-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 290 दिनांक 24.07.2024
वार्ड का नाम- गोवर्धन वार्ड
वार्ड क्र. 14 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 14 मांग **पंजी क्र. 359 युआईडी 18482** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जगमोहन सतनामी/ फिरता** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **धनसाय कोशले/ स्व. जगमोहन कोशले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **23-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 289 दिनांक 24.07.2024
वार्ड का नाम- गोवर्धन वार्ड
वार्ड क्र. 14 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 14 मांग **पंजी क्र. 359 युआईडी 18482** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **जगमोहन सतनामी/ फिरता** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **प्रेमबाई कोशले/ स्व. जगमोहन कोशले** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **23-08-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

**सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12936/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 15-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12936
वार्ड का नाम- 4 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 4 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104J0507A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **AMIT SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MOHAN SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **OMPRAKASH TIWARI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMLOCHAN TIWARI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
**श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./13139/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 24-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13139
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR235J00012** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **AMARNATH GUPTA S/O KEDARNATH GUPTA, PRANESH GUPTA S/O KEDARNATH** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ऋषभ माईनिंग एण्ड ट्रांसपोर्ट कम्पनी प्राई. लिमि. द्वारा डायरेक्टर- श्री पंकज सारडा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री कमल किशोर सारडा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
**श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 25 जुलाई 2024

कलेक्टर ने जनचौपाल में सुनी आमजनों की समस्याएं

आवेदनों का परीक्षण कर समय सीमा में निराकृत करने हेतु किया निर्देशित

कोरबा (विश्व परिवार)। जिला कार्यालय में आयोजित हुए कलेक्टर जनचौपाल में आज कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने आम लोगों की समस्याओंए शिकायतों को गंभीरता से सुनकर अधिकारियों को निराकरण करने हेतु निर्देशित किया। जन चौपाल में आज अलग.अलग समस्याओं के निराकरण हेतु कुल 91 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर ने प्रकरणों के अनुसार संबंधित अधिकारियों को आवेदन प्रेषित करते हुए यथाशीघ्र नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही उन्होंने महत्वपूर्ण प्रकरणों को समय सीमा में दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही संबंधित अधिकारी को प्रेषित किया। इस दौरान अपर कलेक्टर श्री दिनेश नागए सहायक आयुक्त आदिम जाति विकास विभाग श्री श्रीकांत कसेर सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। जन चौपाल में जन्मेजय सिंह ने सीमांकनए प्रतिवेदनए प्रकरण का नकल दिलानेए जाम सिंह ने टावर लगाने से हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति दिलानेए रूप लाल ने लैंको द्वारा ग्राम खोडुल स्थित अर्जित भूमि के प्रकरण में रोजगार दिलानेए ग्राम पंचायत कुरूडीह के ग्रामीणों ने बैगापारा मोहल्ला में सोलर पैनल को सुधारनेए बाकीमोंगरा की कचरी बाई ने पुत्र से भरण.पोषण दिलानेए ग्राम गुरसिया के तिलसाय ने अपनी भूमि का फर्जी तरीके से अन्य व्यक्ति द्वारा नाम दर्ज करानेए वार्ड नंण् 16 पंप हाउस की महिलाओं ने अटल निवास मोहल्ले में पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिलनेए ग्राम पंचायत दोंदरो के सरपंच ने दोंदरो में शासकीय जमीन पर अतिक्रमण होनेए ग्राम पंचायत विजयपुर के सरपंच ने ग्राम विजयपुर में गांव में विद्युत खंभा क्षतिग्रस्त होने तथा विद्युत समस्या होनेए ग्राम आछीमार की सुनिता कोरवा ने रोजगार दिलानेए रजगामार में उत्सव समिति ने दशहरा मैदान रजगामार एवं अन्य शासकीय भूमि पर अतिक्रमण होनेए ग्राम पंचायत चचिया निवासी परमेश्वर सिंह टोप्पो ने भवन निर्माण कार्य करने पर मजदूरी प्राप्त नहीं होनेए रामायण प्रसाद ने पानी निकासी हेतु नाली निर्माण करनेए इंडस्ट्रीयल एरिया निवासी जीवन लाल ने सूखे पेड़ को कटवानेए ग्राम पंचायत जेमरा के रामायण दास ने कच्ची शराब बंद करानेए ग्राम पंडरीपानी वासियों ने शासकीय भूमि से अतिक्रमण हटाने के संबंध में शिकायत की।

संक्षिप्त समाचार

फ्लाई ओवरब्रिज की रेलिंग में सो रहा युवक नीचे गिरा, हुई मौत

जांजगीर-चांपा (विश्व परिवार)। जिले के चांपा फ्लाई ओवरब्रिज से गिरकर एक शराबी की मौत हो गई है। मृतक शराब के नशे में ब्रीज के रेलिंग पर सो गया था तथा नींद में वहां से गिर गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान पवन सूर्यवंशी के रूप में हुई है। घटना चांपा थाना क्षेत्र की है। मिली जानकारी के अनुसार सोमवार रात करीब 11.30 बजे एक युवक के फ्लाई ओवरब्रिज के नीचे मृत अवस्था में पड़े होने की चांपा पुलिस को सूचना मिली। मौके पर पुलिस की टीम पहुंची और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए बीडीएम अस्पताल के मर्चुरी में रखा गया। मृतक युवक की पहचान लछनपुर निवासी पवन सूर्यवंशी के रूप में की गई। बताया जाता है कि सोमवार को काम कर घर आया और खाना खाने के बाद आराम कर रहा था। वह सोमवार की रात 11 बजे घर से बाइक लेकर निकला था। पवन ने शराब पी रखी थी। वह शराब के नशे में फ्लाई ओवरब्रिज में मोटर साइकिल को खड़ी कर रेलिंग में सो गया तथा नींद में वह रेलिंग से सीधे मुंह के बल नीचे गिर गया और उसकी वही मौत हो गई।

कुत्ते पर अत्याचारए एफआईआर दर्ज

कोरबा (विश्व परिवार)। पड़ोसी ने पालतू कुत्ते का पैर तोड़कर घायल कर दिया। मामले में पुलिस ने एफ्आईआर दर्ज कर लिया है। शालू ध्रुव पिता गणेश धुव्र 34 वर्ष जमनीपाली थाना दर्री ने रिपोर्ट दर्ज कराया है कि 19 जुलाई को लगभग 11 बजे उसके घर का पालतू कुत्ता उसके घर के सामने बैठा थाए उसी समय पड़ोसी बबलू गोडरे वहाँ आया और तुम्हारा कुत्ता मेरे घर तरफ आता है बोलकर पालतू कुत्ता को रस्सी में बांधकर लाठी से मारकर पैर को तोड़ डाला। आरोप है कि एक अन्य कुत्ता जो उसका खुद का पालतू थाए उसे भी जान से मार दिया है। घटना की जानकारी शालू ने रोहन को दीए रोहन आया तथा कुत्ते का ईलाज किया। शालू की रिपोर्ट पर बबलू गोडरे के विरुद्ध दर्री थाना में धारा 325 बीएनएस का जुर्म दर्ज कर लिया गया है।

राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की टीम ने जिले में की जा रही डच रोज खेती का किया निरीक्षण

कोरबा (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की टीम द्वारा कटघोरा विकासखण्ड के कुमगरी ग्राम में कृषक श्री जय सिंह और श्रीमती रजनी सिंह द्वारा पॉली हाउस में की जा रही डच रोज की खेती का निरीक्षण किया गया। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड से आए टीम द्वारा कृषको को प्रोत्साहित करते हुए डच रोज के अच्छे उत्पादन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस अवसर पर उद्यानिकी विभाग के अधिकारीए ग्रामीण बैंक के अधिकारी एवं कृषक उपस्थित थे। गौरतलब है कि वर्ष 2023.24 में कुल 40 लाख की लागत से सम्बंधित किसान के जमीन पर पॉली हाउस तैयार कर 2600 वर्ग मीटर में डच रोज खेती प्रारम्भ की गई थी। योजनांतर्गत उक्त प्रोजेक्ट हेतु बैंक द्वारा 30 लाख रुपए का लोन प्रदान किया गया है।

सड़क की मांग करते हुए दिल्ली तक लोटते पहुंचा सरपंच

महासमुंद (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की एक ग्राम पंचायत के सरपंच गांव में सड़क के लिए दिल्ली पहुंच गए हैं। ग्रामीणों ने बाकायदा 5 हजार रुपए का चंदा जमा कर उनको दिल्ली भेजा है। वहां सरपंच सड़क पर लोटते हुए केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के आवास तक गए। हालांकि मंत्री से उनकी मुलाकात नहीं हो सकी। मामला महासमुंद की ग्राम पंचायत बंबूरडीह का है। गांव के सरपंच शत्रुघ्न चेलक का कहना है कि, रामाडबरी से बावनकेरा गांव तक 2 किमी कच्ची सड़क है। सड़क नहीं होने के कारण गांव के लड़के-लड़कियों की शादी नहीं हो पा रही। कोई इस गांव में बारात लाने और बेटी भेजने को तैयार नहीं है। अफ्सरों ने नहीं सुना तो वह केंद्रीय मंत्री के पास पहुंचे हैं। रामाडबरी गांव में बारिश के समय सड़क पर कीचड़ ही कीचड़ हो जाता है। जिससे ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मरीजों को इमरजेंसी में चारपाई के जरिए अस्पताल ले जाना पड़ता है। बच्चे और शिक्षक स्कूल नहीं पहुंच पाते हैं। इस सड़क पर लगातार हादसे भी हो रहे हैं। बताया जा रहा है कि, पक्की सड़क बनाने के लिए साल 2023 में 2 करोड़ 53 लाख 71 हजार रुपए की राशि स्वीकृत हुई थी। बावजूद अब तक टेंडर की प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। जिसके चलते सड़क निर्माण नहीं हो पाया है। ग्राम पंचायत बंबूरडीह का आश्रित ग्राम रामाडबरी में करीब 800 की आबादी है। सरपंच चेलक अपनी पत्नी के साथ 17 जुलाई को दिल्ली के लिए निकले थे। जब वहां किसी भी केंद्रीय मंत्री से मुलाकात नहीं हो पाई, तो 21 जुलाई को प्रदर्शन किया।

दिन में हो या रात में, अब कीचड़ में नहीं चलना पड़ता, बरसाती लाल को बरसात में

गाँव की गलियां हुई पक्की, घर भी होने वाला है पक्का

कोरबा (विश्व परिवार)। वह बरसात का मौसम ही था, जो ग्राम चुईया के बरसाती लाल के लिए हर बार मुसीबत बन जाती थीं। बरसात होते ही जहाँ उन्हें अपने क'चे मकान में मुसीबत मोल लेना पड़ता था वही गाँव की वह गली भी थी जो पानी गिरते ही कीचड़ से इस तरह लथपथ हो जाती थी कि वह चाहकर भी खुद को कीचड़ से बचा नहीं पाता था। अब जब गाँव की गलियां पक्की हो गई है तो बचपन से ही नेत्रहीन बरसाती लाल अपनी छड़ी के सहारे अपनी गाँव की गली में एक छोर से दूसरे छोर तक घूम पाता है और ग्रामीणों से अपनी सुख दुख की कहानी भी साझा कर पाता है। कोरबा ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम चुईया में रहने वाले बरसाती लाल भरिया ने बताया कि उन्हें बचपन से ही दिखाई नहीं देता। वह सबकुछ महसूस कर अपनी छड़ी के सहारे इधर-उधर चल पाता है। उन्होंने बताया कि विगत कई साल तक गाँव की गली बरसात में कीचड़ से सराबोर हो जाती थी। इस बीच उनका पैदल चल पाना मुश्किल हो जाता था। चंद दूरी भी उन्हें कई किलोमीटर लंबी लगती थी। उन्होंने बताया कि गाँव की गलियां अब पूरी तरह से पक्की हो गई है। बरसाती लाल ने बताया कि उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिला है। पक्के घर का निर्माण चल रहा है। कुछ माह के भीतर उन्हें अपनी झोपड़ी से भी छुटकारा मिल जाएगा। उन्होंने बताया कि बरसात में खपरैल के क'चे मकान में परेशानी उठानी पड़ती है। पानी टपकने से उन्हें भीगना पड़ जाता है। जल्दी ही पक्का मकान बन जाने के बाद उनकी बड़ी मुसीबत दूर हो जाएगी। 57 वर्षीय बरसाती लाल ने बताया कि वह अकेला रहता है। राशनकार्ड बना हुआ है और समय पर राशन मिलता है। पेंशन की राशि भी मिलती है। इस बरसात में पक्की सड़क पर चलकर खुशी महसूस कर रहे बरसाती लाल को इस बात की भी खुशी है कि जल्दी ही प्रधानमंत्री आवास योजना से उसका पक्का मकान भी पूरा हो जाएगा। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश में 18 लाख प्रधानमंत्री आवास के निर्माण हेतु राशि स्वीकृत की है, जिससे अनेक हितग्राहियों को लाभ पहुंच रहा है।

थाई बॉक्सिंग प्रतियोगिता में जिले के खिलाड़ियों ने जीते 25 पदक

कोरबा(विश्व परिवार)। थाई बॉक्सिंग प्रतियोगिता में कोरबा के खिलाड़ियों ने राज्य स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए प्रथम स्थान हासिल किया है। अंजना यूनिवर्सिटी की तरफसे आयोजित प्रतियोगिता में कोरबा के 18 खिलाड़ियों ने कुल 19एगोल्डए4 सिल्वर और दो कांस्य पदक जीतने में सफलता पाई है। कोरबा आगमन पर उनका जोरदार स्वागत किया गया। खेलों के मामले में कोरबा का इतिहास हमेशा से ही चमकदार रहा है। यहां के खिलाड़ियों ने जिला स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। एक बार फिर से ऐसा ही कुछ देखने को मिला है। प्रदेश की राजधानी रायपुर में आयोजित राज्य स्तरीय थाई बॉक्सिंग खेल प्रतियोगिता में कोरबा के खिलाड़ियों ने पहला स्थान हासिल किया है। कोरबा से 18 खिलाड़ियों का दल रायपुर गया थाएजहां पर अंजना यूनिवर्सिटी में यह आयोजन किया गया था। कोरबा के खिलाड़ियों ने कुल 18 गोल्डए4 सिल्वर और दो कांस्य पदक जीतने में सफलता पाई।इस खेल प्रतियोगिता में जीत हासिल करने के लिए खिलाड़ियों ने काफी पहले से ही ट्रेनिंग शुरु कर दी थी। लेवल अप और ड्रेगन मार्शल आर्ट दो खेल अकादमी में खिलाड़ियों को कड़ी ट्रेनिंग दी गईएजिसके बाद खिलाड़ियों ने यह चमकदार प्रदर्शन किया। कोरबा आने पर सभी खिलाड़ियों का जोरदार स्वागत किया गया। ढोल नगाड़ों की धुन में खिलाड़ियों ने जमकर ठुमके भी लगाए।

नगर पालिक निगम कोरबा के अभियंताओं ने अशोक वाटिका में किया वृक्षारोपण

कोरबा (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम कोरबा के अभियंताओं ने को सीएसईबी चौक स्टेडियम रोड पर स्थित अशोक वाटिका उद्यान में वृक्षारोपण किया तथा विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपित किए। इस मौके पर अभियंताओं ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक वृक्षों का रोपण करने एवं वृक्षों के संवर्धन व संरक्षण का संदेश भी दिया। नेशनल एयर क्लीन प्रोग्राम स्वच्छ सर्वेक्षण के अंतर्गत निगम के अभियंताओं द्वारा अशोक वाटिका उद्यान में ष्एक पेड़ माँ के नामष् कार्यक्रम का आयोजन कर उद्यान में वृक्षारोपण किया व विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपित किए। अभियंताओं ने पर्यावरण संरक्षण के मद्देनजर अधिक से अधिक वृक्षों का रोपण किए जाने तथा उनके संरक्षण व संवर्धन का संदेश देते हुए पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस मौके पर निगम के अधीक्षण अभियंता एमण्केण् वर्माए उपायुक्त बीण्पीण् त्रिवेदीए कार्यपालन अभियंता एण्केण् शर्माए एमण्एनण् सरकारए विनोद शांडिल्यए अखिलेश शुक्लाए तपन तिवारीए सहायक अभियंता राकेश मसीहए योगेश राठौरए सुनील टांडेए लीलाधर पटेलए सोमनाथ डेहरेए अश्वनी दासए अभय मिंजए प्रमोद जगतए पीयूष राजपूतए आकाश अग्रवालए गोयल सिंह विमलए सुशील सोनीए अनिल रामए किरण साहूए अंजूलता तिग्गाए अरूण मिश्रा आदि के साथ अन्य अभियंताओं व अधिकारी कर्मचारियों ने वृक्षारोपण किया।

जिले में खाद-बीज एवं कीटनाशक दुकानों का जिला स्तरीय दल के द्वारा निरीक्षण

कोरबा (विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री अजीत बसंत के निर्देशानुसार जिले में किसानों को मानक स्तर का खाद, बीज एवं कीटनाशक उपलब्ध कराने हेतु जिला स्तरीय निगरानी दल द्वारा जिले के सभी खाद-बीज एवं कीटनाशक विक्रय करने वाले निजी एवं सहकारी दुकानों का सतत् निरीक्षण किया जा रहा है। ताकि किसानों को गुणवत्ता युक्त खाद, बीज एवं कीटनाशक उपलब्ध हो सके। प्रभारी उप संचालक कृषि ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि खरीफसीजन में किसानों के द्वारा लगातार खाद, बीज एवं कीटनाशकों के अधिक मूल्य में विक्रय करने एवं अमानक सामग्री के वितरण की शिकायत बनी रहती है। जिसके लिए शासन के निर्देशानुसार कोरबा जिला में जिला स्तरीय निरीक्षण दल का गठन किया गया है। जिला स्तरीय निरीक्षण दल के द्वारा विगत दिवस कोरबा के खाद बीज एवं कीटनाशक दुकान छत्तीसगढ़ फर्टिलाईजर, कृषक जगत, सिंघानिया बीज भंण्डार एवं जय किसान बीज भंण्डार का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में किसी भी प्रकार की अनियमितता दर्शित नही हुई है। दल द्वारा विक्रताओं को आवश्यक निर्देश दिया गया एवं मानक स्तर का बीज, खाद एवं कीटनाशक दवाओं के विक्रय सही मूल्य करने हेतु निर्देश दिए गए।

जांच के बाद गुणवत्ताहीन नाली निर्माण पर चला प्रशासनिक बुलडोजर

निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से नहीं किया जाएगा कोई भी समझौता : सीईओ

बैकुण्ठपुर (विश्व परिवार)। कोरिया जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्ताहीन निर्माण कार्यों पर सख्ती का रुख लगातार जारी है। कलेक्टर कोरिया विनय कुमार लंगेह के निर्देशानुसार किसी भी योजना के तहत होने वाले निर्माण कार्यों में गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। मंगलवार को इसी तरह के एक गुणवत्ताहीन नाली निर्माण कार्य पर प्रशासनिक बुलडोजर चला कर पूरे निर्माण को हटा दिया गया। इस संबंध में जानकारी देते हुए जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ आशुतोष चतुर्वेदी ने बताया कि गत दिनों सोनहत जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत कैलाशपुर में कुछ निर्माण कार्यों में लापरवाही की शिकायत संज्ञान में आई थी जिस पर अविलंब जांच के लिए टीम भेजी गई थी। इनमें से एक ग्राम पंचायत कैलाशपुर में महात्मा गांधी नरेगा योजना अंतर्गत सोलर पंप से लेकर राजेश यादव के घर तक कुल तीन सौ मीटर पक्की नाली का निर्माण स्वीकृत किया गया है इस कार्य के लिए ग्राम पंचायत कैलाशपुर को ही निर्माण एजेंसी बनाया गया है। जांच टीम ने शिकायत के बाद मौके पर जाकर कार्यों की गुणवत्ता की जांच के लिए सैंपल एकत्र किए। इन सेंपल की जांच में पाया गया कि नाली निर्माण का उक्त कार्य निर्धारित मानकों के अनुसार एजेंसी द्वारा नहीं कराया गया है। जांच उपरांत पूरे निर्माण कार्य को गुणत्ताहीन पाए जाने पर इस नाली को पूरी तोड़कर नई नाली निर्धारित मानकों के अनुरूप बनाए जाने के निर्देश दिए गए। इस तारतम्य में एजेंसी द्वारा पूरे नाली को तोड़ा गया। जिला पंचायत सीईओ डॉ आशुतोष ने बताया कि जिन कार्यों की शिकायत प्राप्त हुई है उन सभी की जांच कराई जा रही है। उन्होने कहा कि प्रत्येक कार्य की जांच कार्यवाही जैसे जैसे पूरी होगी तत्काल सख्त कदम उठाए जाएंगे। विदित हो कि इस कार्य में लापरवाही बरतने वाले अधिकारी कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किए जा चुके हैं और उनके जवाब प्राप्त होते ही अग्रिम कार्यवाही प्रस्तावित की जाएगी। जिला पंचायत सीइओ डॉ आशुतोष ने कहा कि जनहितकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी तरह की लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

संपादकीय

भाजपा के लिए खतरे की घंटी

देश के सात राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के आए नतीजों में 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों ने भाजपा को करारा झटका देते हुए 10 सीटें जीत लीं। भाजपा दो सीट ही जीत सकी जबकि एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार की जीत हुई। पश्चिम बंगाल की चार, हिमाचल प्रदेश की तीन, उत्तराखंड की दो, पंजाब, मध्य प्रदेश, बिहार और तमिलनाडु की एक-एक सीट के लिए चुनाव हुआ था। इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस, 'आप', टीएमसी और द्रमुक ने अपने उम्मीदवार उतारे थे। नतीजों से इंडिया गठबंधन के घटक दल गद्गद् हैं, और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकाजरुन खरगे ने नतीजों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दावा कि लोगों ने भाजपा के अहंकार, कुशासन और नकारात्मक राजनीति को नकार दिया है और नतीजे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की गिरती राजनीतिक साख का प्रमाण हैं। खरगे ने 'एक्स' पर पोस्ट करके इन नतीजों पर मतदाताओं का आभार जताया है। खास बात यह रही कि उत्तराखंड, हिमाचल और पंजाब में जनता ने पाला बदलने वाले नेताओं को नकार दिया। उत्तराखंड की दोनों सीटें कांग्रेस ने जीत लीं। सर्वाधिक चर्चा प्रसिद्ध तीर्थस्थल बद्रीनाथ सीट की है, जहां कांग्रेस अपनी सीट बरकरार रखने में सफल रही। यहां भाजपा की टिकट पर चुनाव लड़े राजेंद्र सिंह भंडारी कांग्रेस के सिटिंग विधायक थे लेकिन पाला बदल कर भाजपा में जा मिले। भाजपा ने उन्हें प्रत्याशी बना दिया लेकिन कांग्रेस के लखपत सिंह बुटोला ने उन्हें पराजित कर दिया। हिमाचल प्रदेश में भी रोचक परिदृश्य उभरा है। देहरा सीट से मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू की पत्नी कमलेश जीतीं। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी को हराया। प्रदेश में पहली बार होगा जब पति-पत्नी सदन में साथ होंगे। कांग्रेस के विधायक 40 हो गए हैं, जबकि भाजपा की 28 सीटें हैं। फरवरी में राज्य सभा चुनाव के वक्त विधायकों की बगावत से कांग्रेस की सरकार पर संकट के बादल मंडराने लगे थे, जो टल गया है। मध्य प्रदेश में कमलनाथ के गढ़ माने जाने वाले छिंदवाड़ा क्षेत्र में भाजपा ने कांग्रेस को फिर झटका देते हुए अमरवाड़ा सीट जीत ली। पश्चिम बंगाल में दीदी का जलवा कायम है, और टीएमसी ने चारों सीटें जीत लीं। भाजपा से तीन सीटें छीनी हैं। बेशक, नतीजे भाजपा के लिए खतरे की घंटी हैं, जिनका उप्र में विधानसभा की 10 सीटों पर होने वाले उपचुनाव तथा हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड के आसन्न असेंबली चुनाव पर निश्चित असर दिखेगा।

तकनीकी आजादी की ओर बढ़े भारत

भाविश अग्रवाल

पिछले दस साल में भारत की जीडीपी लगभग दोगुनी होकर 3.5 ट्रिलियन डॉलर की हो गई है। हम दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में एक हैं। हमारा लक्ष्य है, 2047 तक भारत विकसित देश बने। अगर हम अपनी आर्थिक विकास दर को आठ प्रतिशत से बढ़ाकर 12 प्रतिशत कर लें, तो भारत 50 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है। दुनिया भर में तकनीक तेजी से विकसित हो रही है, खासकर एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धिमत्ता) और नई ऊर्जा के क्षेत्र में। हमारे समकक्ष देश, जैसे चीन, नई तकनीक में भारी निवेश कर रहे हैं, पारंपरिक उद्योगों में बदलाव ला रहे हैं और नए क्षेत्रों को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत के विकास और प्रतिस्पर्द्धा में आगे रहने के लिए हमें एआई और नई ऊर्जा जैसी तकनीक को प्राथमिकता देनी होगी। इससे हमारी पूरी अर्थव्यवस्था में बड़ा बदलाव आ सकता है। ध्यान रहे, साल 1947 में हमने अपनी राजनीतिक आजादी पाई थी और साल 2047 में हमें अपनी तकनीकी आजादी हासिल करनी है। हमें तकनीकी उन्नति के लिए अपनी खुद की रणनीति बनानी होगी। अपने देश में तकनीक का यह उपयोग सिर्फ आर्थिक विकास के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव के लिए भी होना चाहिए। भारत की अर्थव्यवस्था काफी हद तक डिजिटल हो चुकी है, लेकिन कंप्यूटिंग में हमारी भागीदारी अभी भी बहुत कम है। आईटी सेवाओं में हमारी बड़ी सफलता के बावजूद 30 ट्रिलियन डॉलर की ग्लोबल टेक्नोलॉजी इंडस्ट्री में भारत का हिस्सा सिर्फ एक प्रतिशत है। यहां निवेश की बड़ी जरूरत है। भारत अभी भी अनोखी ताकतों से लैस है। विश्व के सबसे बड़े डेवलपर समुदाय में से एक भारत में है। वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक सिलिकॉन डिजाइनर, विशाल मात्रा में उत्पन्न डाटा,और दुनिया का सबसे बड़ा आईटी उद्योग हमें एआई में अग्रणी बनाने की स्थिति में लाते हैं। हम एआई महाशक्ति में बदल सकते हैं। ठीक वैसे ही, जैसे चीन ने वैश्विक विनिर्माण के क्षेत्र में क्रांति ला दी। एआई के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए भारत को डाटा, कंप्यूटिंग और एल्गोरिदम में विशेषज्ञता का लाभ उठाना चाहिए। भारत दुनिया का 20 प्रतिशत डाटा बनाता है, लेकिन हमारा 80 प्रतिशत डाटा विदेश में स्टोर किया जाता है, एआई में प्रोसेस किया जाता है और फिर डॉलर में भुगतान करके वापस आयात किया जाता है। यह डाटा कॉलोनाइजेशन ईस्ट इंडिया कंपनी के तौर-तरीकों की याद दिलाता है, जहां भारत के कच्चे माल का दोहन करके, उन्हें प्रसंस्कृत उत्पाद के रूप में महंगे दामों पर भारतीयों को बेचा जाता था। आज, हमारे डिजिटल कच्चे माल, यानी डाटा का इसी तरह से लाभ उठाया जा रहा है। हमें अपने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग करके गोपनीयता-संरक्षित डाटासेट बनाना चाहिए। हम अपनी डीपीआई की सफलता (जैसे, यूआईडीएआई, यूपीआई, ओएनडीसी) पर आधारित होकर एक नई, दुनिया की सबसे बड़ी ओपन-सोर्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बना सकते हैं, जो भारत के सिद्धांतों पर आधारित हो। बेशक, साल 2030 तक 50 गीगावाट डाटा सेंटर की क्षमता पाने के लिए 200 अरब डॉलर के निवेश की जरूरत होगी। यह हासिल करने योग्य लक्ष्य है। भारत सिलिकॉन डेवलपमेंट और डिजाइन टैलेंट के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र है। फिर भी, हमारे पास भारत में डिजाइन किए गए चिप्स की कमी है। हमें इंडस्ट्री लीडिंग चिप डिजाइन प्रोजेक्ट्स और रिसर्च-लिंक्ड प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से सरकारी प्रोत्साहन की जरूरत है, ताकि रोजगार बढ़े, भारत में काम करने के लिए विश्व स्तरीय प्रतिभाओं और बेहतरीन वैज्ञानिकों को आकर्षित किया जा सके। पर्याप्त रोजगार वाले विकसित भारत के लिए नई ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला और तकनीक का भी विकास होना चाहिए। वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य बदल रहा है। भारत को इस बदलाव में सबसे आगे रहना चाहिए। नई ऊर्जा का पूरा इकोसिस्टम तीन स्तंभों पर टिका है : रिन्यूएबल एनर्जी जेनरेशन, बैटरी स्टोरेज और इलेक्ट्रिक वाहन। रिन्यूएबल एनर्जी का मतलब अक्षय ऊर्जा में भारत की ताकत बढ़नी चाहिए। भारत की अक्षय ऊर्जा क्षमता 2014 में 72 गीगावाट से बढ़कर 2023 में 175 गीगावाट से ज्यादा हो गई है। सोलर एनर्जी क्षमता 3.8 गीगावाट से बढ़कर 88 गीगावाट से ज्यादा हो गई है। वैसे, हम इस मोर्चे पर पीछे हैं। हमें 2030 तक 500 गीगावाट के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं पर ध्यान देना चाहिए। अक्षय ऊर्जा को प्रभावी बनाने के लिए हमें इसे मजबूत बैटरी स्टोरेज से जोड़ना होगा। अभी हमारी बैटरी स्टोरेज क्षमता सिर्फ दो गीगावाट है, जबकि चीन की 1,700 गीगावाट है। अपने अक्षय ऊर्जा ग्रिड को पावर देने और 100 प्रतिशत इलेक्ट्रिक वाहन के लक्ष्य को पाने के लिए 1,000 गीगावाट क्षमता का लक्ष्य रखना होगा। इलेक्ट्रिक वाहनों की बात करें, तो भारत में अभी प्रति 1,000 लोगों पर 200 से भी कम इलेक्ट्रिक वाहन हैं। चीन के तीन करोड़ की तुलना में भारत में हर साल सिर्फ बीस लाख ईवी बेचे जाते हैं। भारत को साल 2030 तक पांच करोड़ इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाला दुनिया का सबसे बड़ा ईवी बाजार बनने का लक्ष्य रखना चाहिए। यह बदलाव पर्यावरण को स्वच्छ बनाएगा, परिवहन लागत को कम करेगा। वर्तमान में, सौर ऊर्जा उत्पादन, लिथियम सेल उत्पादन और ईवी उत्पादन जैसे न्यू एनर्जी इकोसिस्टम का 90 प्रतिशत हिस्सा चीन में है। अपनी खुद की तकनीक और आपूर्ति श्रृंखला बनाकर हम अपनी अर्थव्यवस्था को अधिक ऊर्जा-कुशल बना सकते हैं और देश में लाखों नौकरियां पैदा कर सकते हैं। भविष्य की तकनीकों में महारत हासिल करना ही भारत के लिए ग्लोबल लीडरशिप का रास्ता है। हमें पीछे नहीं रहना है, बल्कि समकक्षों को पीछे छोड़कर एआई और नई ऊर्जा के क्षेत्र में लीडर बनना है। हम अपनी डीपीआई की सफलता (जैसे, यूआईडीएआई, यूपीआई, ओएनडीसी) पर आधारित होकर एक नई, दुनिया की सबसे बड़ी ओपन-सोर्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बना सकते हैं, जो भारत के सिद्धांतों पर आधारित हो। बेशक, साल 2030 तक 50 गीगावाट डाटा सेंटर की क्षमता पाने के लिए 200 अरब डॉलर के निवेश की जरूरत होगी। यह हासिल करने योग्य लक्ष्य है। भारत सिलिकॉन डेवलपमेंट और डिजाइन टैलेंट के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र है। फिर भी, हमारे पास भारत में डिजाइन किए गए चिप्स की कमी है। हमें इंडस्ट्री लीडिंग चिप डिजाइन प्रोजेक्ट्स और रिसर्च-लिंक्ड प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से सरकारी प्रोत्साहन की जरूरत है, ताकि रोजगार बढ़े, भारत में काम करने के लिए विश्व स्तरीय प्रतिभाओं और बेहतरीन वैज्ञानिकों को आकर्षित किया जा सके। पर्याप्त रोजगार वाले विकसित भारत के लिए नई ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला और तकनीक का भी विकास होना चाहिए।

विशेष लेख

एफएसएसएआई की विकास यात्रा: वर्तमान और भविष्य

जे.पी. नड्डा

एनडीए शासन के दौरान दूसरी बार स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री बनने के बाद, पिछले सप्ताह जब मैंने भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का दौरा किया, तो मुझे 2014 में स्वास्थ्य मंत्री के रूप में अपने शुरुआती कार्यकाल का स्मरण हो आया। यह वह समय था जब एफएसएसएआई खुद को देश के खाद्य-सुरक्षा नियामक के रूप में स्थापित कर रहा था और उस पर दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी के लिए खाद्य मानक और नीतियाँ तय करने की बड़ी ज़िम्मेदारी थी।22 अगस्त 2016 को खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के एक दशक पूरा होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जब मैंने पहली बार एफएसएसएआई टीम और विभिन्न हितधारकों से मुलाकात की, तो एफएसएसएआई का दृष्टिकोण स्पष्ट था। उनका लक्ष्य नीतियों को मज़बूत करना, उभरती चुनौतियों का समाधान करना तथा नागरिकों और खाद्य व्यवसायों के बीच सामाजिक और व्यावहारिक परिवर्तन को बढ़ावा देना था। इन पहलों को 'ईट राइट इंडिया मूवमेंट' के तहत खूबसूरती से एकीकृत किया गया है, जिसने सभी भारतीयों के लिए 'सुरक्षित, स्वस्थ और सतत' भोजन सुनिश्चित करने के लिए एक समग्र 'संपूर्ण प्रणाली दृष्टिकोण' अपनाया है। स्वास्थ्य मंत्रालय और एफएसएसएआई हमारे देश के खाद्य-सुरक्षा परिदृश्य को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। एक मज़बूत खाद्य-सुरक्षा पारिस्थितिकी तंत्र केवल मज़बूत खाद्य-नीतियों और मानकों की नींव पर ही बनाया जा सकता है। यह जानकर खुशी होती है कि एफएसएसएआई के वैज्ञानिक पैनल और विशेषज्ञ समितियों में काफ़ी विस्तार हुआ है, जिसमें 88 संगठनों के 286 विशेषज्ञ शामिल हैं। इससे वैश्विक मानकों के अनुरूप मानकों और नीतियों के विकास की गति में उल्लेखनीय तेज़ी आई है। एफएसएसएआई की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मिलेट के मानकों का सृजन है, जिन्हें 2023 में वैश्विक मिलेट (श्री अन्न) सम्मेलन में प्रधानमंत्री द्वारा लॉन्च किया गया था। ये मानक कोडेक्स एलिमेंटेरियस आयोग के साथ साझा किए गए हैं, जिससे मिलेट के वैश्विक मानकों के विकास और भारत को एक अग्रणी देश के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। सुरक्षित भोजन सुनिश्चित करने के लिए नीतियों और मानकों के विकास के साथ-साथ उनका प्रवर्तन और परीक्षण भी उतना ही आवश्यक है। पिछले आठ वर्षों में एफएसएसएआई के खाद्य-परीक्षण बुनियादी ढाँचे में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। माननीय प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में, कैबिनेट ने राज्य खाद्य-परीक्षण प्रयोगशालाओं को मज़बूत करने के लिए ?482 करोड़ की मंज़ूरी दी। एफएसएसएआई ने फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स नाम से मोबाइल फूड लैब उपलब्ध कराकर दूरदराज़ के इलाकों तक पहुँचना शुरू कर दिया है। इन उपलब्धियों का उत्सव मनाते समय, हमें वैश्विक स्तर पर उभर रहे रुझानों, जैसे कि प्लांट बेस्ड प्रोटीन, प्रयोगशाला में विकसित मांस आदि को भी स्वीकार करना चाहिए। एफएसएसएआई ने नई श्रेणियों, जैसे ङ्क वीगन खाद्य पदार्थों, जैविक उत्पादों और आयुर्वेदिक आहार के लिए सक्रिय रूप से मानक विकसित किए हैं और यह खाद्य-सुरक्षा के उभरते रुझानों के अनुरूप निरंतर अनुकूलन कर रहा है। जैसे-जैसे वैश्विक खाद्य व्यापार का विस्तार हो रहा है, एफएसएसएआई कोडेक्स जैसे विभिन्न मंचों पर अंतरराष्ट्रीय नियामकों के साथ साझेदारी कर रहा है। इसका उद्देश्य बढ़ती आबादी के लिए सुरक्षित और पौष्टिक भोजन सुनिश्चित करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना और सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करना है। एफएसएसएआई ने 2023 में दिल्ली में पहला वैश्विक खाद्य नियामक शिखर सम्मेलन भी आयोजित किया, जो खाद्य नियामकों के लिए उभरती खाद्य-सुरक्षा चुनौतियों के बारे में मिलने और विचार-विमर्श करने के लिए अपनी तरह का पहला सहयोगी मंच है। एफएसएसएआई आने वाले महीनों में जीएफआरएस के दूसरे संस्करण के लिए तैयार है। जब हम खाद्य-सुरक्षा पर बात करते हैं, तो उपभोक्ताओं और नागरिकों को साक्ष्य-आधारित जानकारी के माध्यम से विभिन्न खाद्य-सुरक्षा मुद्दों पर सशक्त बनाना महत्वपूर्ण है। तभी हमारा काम समग्रता से पूर्ण होगा।

छद्म लड़ाई में जवानों की शहादत बड़ी चिंता का

अजीत द्विवेदी

जम्मू कश्मीर के हालात बदल रहे हैं। बाहरी लोगों पर हमले और हत्या के बाद अब सुरक्षा बलों पर हमले का सिलसिला तेज हो गया है। सिर्फ इस महीने में कम से कम सात जगह आतंकवादियों के साथ सुरक्षा बलों की मुठभेड़ हुई है, जिसमें 12 जवान शहीद हुए हैं। डोडा के डेसा जंगल में सोमवार, 15 जुलाई को आतंकवादियों के हमले में सेना के एक कैप्टेन सहित पांच जवान शहीद हो गए। इससे पहले कुलगाम में दो जगहों पर मुठभेड़ हुई, जिसमें सुरक्षा बलों के दो जवान मारे गए।इसके बाद कठुआ में सेना की गाड़ी पर आतंकवादियों ने घात लगा कर हमला किया, जिसमें पांच जवान शहीद हो गए। सुरक्षा बलों की ओर से बताया गया कि कठुआ में सेना की गाड़ी पर पहले ग्रेनेड से हमला हुआ और उसके बाद गोलियां चलाई गईं। यह घटना पिछले महीने रियासी में हुई घटना से मिलती जुलती थी, जिसमें आतंकवादियों ने यात्रियों से भरी एक बस के ड्राइवर को गोली मार दी, जिससे बस खाई में गिर गई और नौ लोगों की जान चली गई। माना जा रहा है कि आतंकवादी सेना की गाड़ी भी इसी तरह से खाई में गिराना चाहते थे ताकि अधिकतम नुकसान हो। भारत सरकार का दावा है कि अनुच्छेद 370 हटने के बाद आतंकवादी घटनाओं में कमी आई है। एक आंकड़े के मुताबिक पांच अगस्त 2016 से चार अगस्त 2019 तक राज्य में नौ सौ आतंकवादी घटनाएं हुई थीं, जिनमें 290 जवान शहीद हुए थे और 191 नागरिकों की जान गई थी। लेकिन अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 समाप्त होने के बाद अगले तीन साल में इसमें गिरावट आई। पांच अगस्त 2019 से चार अगस्त 2022 के बीच 617 आतंकवादी घटनाएं हुईं, जिनमें 174 जवान शहीद हुए और 110 नागरिक मारे गए। लेकिन सवाल है कि क्या शांति काल में दूसरे किसी देश में एक सीमा पर इतने जवान शहीद होते हैं या इतने नागरिक मारे जाते हैं? जब पाकिस्तान के साथ युद्धविराम संधि लागू है और कोई लड़ाई नहीं चल रही है तो छद्म लड़ाई में इतने जवानों की शहादत और आम नागरिकों की मौत निश्चित रूप से बड़ी चिंता का कारण होना चाहिए। दूसरा सवाल यह है कि पिछले कुछ समय से जब राज्य में शांति बहाली का दावा किया जा रहा था तो अचानक सैन्य बलों पर हमले की घटनाओं में क्यों तेजी आ गई? क्या राज्य में लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू होने और चुनाव की तैयारियों की वजह से ऐसा हो रहा है? गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव में जम्मू कश्मीर के नागरिकों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था। मतदान के आंकड़े ऐतिहासिक थे। पिछले लगभग चार दशक में इतने ज्यादा लोगों ने वोट नहीं डाले थे। अब अगले दो महीने में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं, जिसके बाद जम्मू कश्मीर को चुनी हुई सरकार मिलेगी। तभी सवाल है कि क्या आतंकवाद को भारत विरोधी नीति के तौर पर इस्तेमाल करने वाले पड़ोसी देश पाकिस्तान को इससे बेचैनी हो रही है कि क्यों जम्मू कश्मीर के लोग लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल हो रहे हैं?यह संभव है कि पाकिस्तान और उसके समर्थन से फलने फूलने वाले आतंकवादी संगठन एक रणनीति के तौर पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को विफल करने के लिए इस तरह की घटनाओं को अंजाम दे रहे हों। यह ध्यान रखने की जरुरत है कि पाकिस्तान ने लंबे समय से आतंकवाद को भारत विरोधी कूटनीति का एक हिस्सा बना रखा है और वह इसे छोड़ने वाला नहीं है। फर्क इतना है कि इसका रूप बदल रहा है। पुराने आतंकवादी संगठनों की जगह नए नाम के संगठन आ गए हैं। पुराने आतंकवादी सरगनाओं की जगह नए सरगना आ गए हैं। जैसे डोडा की ताजा घटना की जिम्मेदारी कश्मीर टाइगर्स ने ली है। इसका कारण यह है कि फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स यानी एफएटीएफ की जांच से पाकिस्तान घबराया है और उसे किसी तरह से एफटीएफ की सूची से बाहर निकलना है। इसलिए वह ये मैसेज बनवा रहा है कि उसने आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई की है और कई समूहों को समाप्त कर दिया है। लेकिन असल में ऐसा नहीं है। सारे आतंकवादी समूह अब भी नाम बदल कर सक्रिय हैं। भारत को इस साजिश को बेनकाब करने का प्रयास करना चाहिए ताकि पाकिस्तान पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बना रहा। एफएटीएफ का दबाव कम होगा तो पाकिस्तान की वित्तीय मुश्किलें कम होंगी और तब उसकी भारत विरोधी गतिविधियां और तेज हो सकती हैं। पाकिस्तान की आंतरिक राजनीति का भी एक पहलू है। शरीफ बंधुओं ने सेना के साथ मिल कर सत्ता पर कब्जा कर लिया है और इमरान खान को जेल में बंद कर रखा है, जिससे आवाम में नाराजगी है। इस नाराजगी को कम करने के लिए भी भारत विरोधी गतिविधियां तेज की गई हो सकती हैं। जम्मू कश्मीर के बदलते सुरक्षा लैंडस्केप का एक बड़ा कारण यह भी है कि भारत इस क्षेत्र में अपनी सीमाओं की सुरक्षा और आंतरिक शांति के लिए पूरी तरह से सैनिक व्यवस्था पर निर्भर है। सुरक्षा और शांति की जो तस्वीर दिखाई जा रही है वह लाखों सैनिकों और अर्धसैनिक बलों की तैनाती की वजह से है। भारत ने पाकिस्तान के साथ कूटनीतिक वार्ता बंद कर रखी है। दोनों देशों के बीच कारोबार बंद है। खेल और फिल्म के जरिए होने वाली सॉफ्ट डिप्लोमेसी भी बंद है। अगर दोनों देशों के आर्थिक हित जुड़े होते तो संभव है कि सुरक्षा के हालात इतने नहीं बिगड़ते। सेना के दम पर पूरे राज्य की सुरक्षा लंबे समय तक सुनिश्चित करना एक मुश्किल काम है। इसी का एक दूसरा पहलू यह है कि ऐतिहासिक रूप से भारतीय सेना कश्मीर घाटी में तैनात है। इसलिए वहां सुरक्षा बलों की मदद से काफी हद तक सुरक्षा सुनिश्चित की गई है। लेकिन अब आतंकवादी हमलों का निशाना जम्मू का इलाका है। कठुआ, राजौरी में लगातार हमले हो रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि जम्मू रेंज में भी सेना को उसी तरह का बंदोबस्त करना होगा, जैसा कश्मीर घाटी में किया गया है। यह सेना और सुरक्षा बलों पर अतिरिक्त बोझ बढ़ाने वाला होगा। एक समस्या यह भी है कि लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने पाक अधिकृत कश्मीर यानी पीओके को भारत में मिलाने की चर्चा छेड़ दी। वोट के लिए भाजपा के बड़े नेताओं ने कहा कि मोदी को जिताएं तो छह महीने में पीओके भारत का होगा। इससे पाकिस्तान रक्षात्मक हुआ है और चीन की भी चिंता बढ़ी है।

पांच साल का दूसरा कार्यकाल हासिल

श्रुति व्यास

सब कुछ वैसा ही हुआ, जैसा सोचा जा रहा था। उर्सुला वॉन डेर लेन ने फिर से यूरोपीय आयोग यानी ईसी के अध्यक्ष के रूप में पांच साल का दूसरा कार्यकाल हासिल कर लिया है। यूरोपीय संसद ने 284 के मुकाबले 401 वोट से उनके नाम पर मुहर लगाई। 15 सदस्य गैरहाजिर रहे। अब तक ईसी का कोई अध्यक्ष दूसरी बार निर्वाचित नहीं हुआ था। हालांकि उनकी राह में बाधाएं थीं। 27 ईयू नेताओं का समर्थन उनको पहले से हासिल था। लेकिन यूरोपीय संसद के अनुमोदन की उन्हें आवश्यकता थी। और वहां हालात उनके अनुकूल नहीं थे। लेकिन गुरुवार को हुए मतदान में उन्होंने वहां अनुमोदन हासिल कर लिया। उर्सुला, जो एक जर्मन राजनेता हैं, को गुरूवार को होने वाले मतदान में संसद के 720 सदस्यों में से आधे से ज्यादा, मतलब कम से कम 361, के समर्थन की जरुरत थी और उनको 401 वोट मिले। तीन राजनीतिक समूहों के समर्थन की उम्मीद उनको पहले से थी। इन तीनों को संयुक्त रूप से पिछले महीने हुए चुनाव में बहुमत हासिल हुआ था और इन समूहों ने 2019 में भी उनका समर्थन किया था। ये हैं उनकी स्वयं की मध्य-दक्षिणपंथी यूरोपियन पीपुल्स पार्टी या ईपीपी, जिसकी 188 सीटें हैं, सोशलिस्ट, जिसकी 136 सीटें हैं और उदारवादी रिन्यू, जिनकी 77 सीटें हैं। लेकिन राजनीतिक उठापटक जोरों पर थी। तीनों समूहों के कई सांसदों ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि वे वॉन डेर लेन का समर्थन नहीं करेंगे। इनमें ईपीपी समूह की फ्रांस की रूढ़िवादी कंजरवेटिव रिपब्लिकन पार्टी, जर्मनी, आयरलैंड और रोमानिया के उदारवादी तथा फ्रांस और इटली के सोशलिस्ट और कुछ अन्य सांसद शामिल थे। साथ ही, चूंकि मतदान गोपनीय होता है इसलिए इस बात की भी संभावना थी कि कुछ सांसद सार्वजनिक रूप से उनका समर्थन करेंगे मगर स्ट्रासबर्ग में मतदान के समय %नो' का बटन दबाएंगे। असल में सैद्धांतिक तौर पर अधिकांश देशों के नेता उर्सुला वॉन डेर लेन को पसंद करते हैं। उन्होंने कई देशों द्वारा संयुक्त रूप से दिए गए ऋण से पोस्ट पैनडेमिक रिकवरी फंड बनाकर दक्षिण यूरोपीय देशों को संतुष्ट कर दिया, वहीं उत्तरी यूरोप के देशों की क्लाइमेट चेंज सम्बंधी चिंताओं की ओर भी ध्यान दिया। पूर्वी यूरोप के देश, यूक्रेन के प्रति उनके दृढ़ समर्थन से खुश हैं। जर्मनी के ओलाफ स्कोल्ज, विरोधी पार्टी के होने के बावजूद अपनी हमवतन का समर्थन करेंगे। जो एकमात्र नेता उनकी जबरदस्त खिलाफत करते आ रहे हैं वे हैं हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबान। कई नेता कुछ अन्य मुद्दों के चलते उर्सुला वॉन डेर लेन के खिलाफ हैं, जैसे पोलैंड के डोनाल्ड टस्क, जो उनके ही समूह के हैं लेकिन जिन्हें हाल में उनके द्वारा करवाया गया अप्रवासियों संबंधी समझौता पसंद नहीं आया। स्पेन के पेड्रो सांचेज भी उनके इजराइल समर्थक रवैए के कारण उनके खिलाफ हैं। परंतु उर्सुला में विचारधारात्मक दृढ़ता का अभाव उन्हें खतरनाक बनाता है। सन 2019 में ईयू के नेता यूरोपीय संसद पर उन्हें इसलिए थोप सके थे क्योंकि उस समय वे एक अनजान व्यक्ति थीं। मगर अब ऐसा नहीं है। ईसी में अपने पांच साल के कार्यकाल के दौरान उन्होंने जलवायु सम्बंधी मुद्दों सहित अन्य मामलों में वामपंथ की ओर झुकाव दिखाया। मगर फिर वे दक्षिणपंथ की ओर झुक गईं और उन्होंने ईयू की अप्रवासी नीति में अप्रवासियों को रवांडा रवाना करने जैसी योजनाओं का समर्थन किया। उनके गुण और उनकी कमियां सबके सामने हैं। कोविड महामारी के दौरान उनकी कमियां सामने आईं तो रूस के यूक्रेन पर हमले के मामले में उनके गुण। उर्सुला नि:संदेह यह दावा कर सकतीं हैं कि उन्होंने कई सफलताएं हासिल की हैं, खासतौर पर इसलिए क्योंकि उनका अधिकांश कार्यकाल संकटों का मोचन करने में बीता। वे हर संकट पर प्रतिक्रिया देती रहीं हैं और कई मामलों में उन्होंने संकट से निपटने की ज़िम्मेदारी यूरोपीय आयोग में शामिल विभिन्न राष्ट्रों के नेताओं पर छोड़ दी, जिससे आयोग के अध्यक्ष चार्ल्स मीशेल से उनकी प्रतिद्वंदिता हो गई। यह उनके लिए नुकसानदायक है। फिर दुनिया में चल रहे दो युद्धों के मामले में उनका रुख का मसला भी है। वे यूक्रेन के मामले में जेलेंस्की का समर्थन कर रही हैं मगर गाजा युद्ध के मामले में वे पूरी तरह नेतन्याहू के साथ हैं। इस कारण भी उनकी आलोचना हुई। मगर दुनिया और उनके पुनर्निर्वाचन के बारे में व्याप्त अनिश्चितता से उन्हें फायदा हुआ। डोनाल्ड ट्रम्प की अमेरिका के राष्ट्रपति के तौर पर वापसी की सम्भावना है, यूक्रेन का युद्ध समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है, यूरोप में अति-दक्षिणपंथियों का दबदबा बढ़ रहा और एक आर्थिक ताकत के रूप में यूरोपीय संघ कमजोर हो रहा है। ऐसे में यूरोप एक नए नेता को चुनने की जोखिम नहीं ले सकता था। तभी इस बात की काफी सम्भावना थी कि उर्सुला वापस आ जाएंगी। मगर इससे ईयू के अंदर व्याप्त अनिश्चितता और असंतोष खत्म नहीं होगा।

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ससंघ का जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी संस्थान मठ अतिशय क्षेत्र नांदणी (महाराष्ट्र) में हर्षोल्लास से मनाया गया चातुर्मास कलश स्थापना समारोह

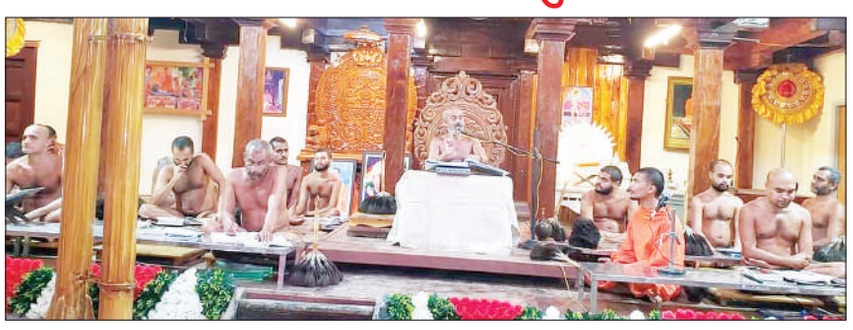

कोल्हापूर (विश्व परिवार)। परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ससंघ का ऐतिहासिक चौमासा स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी संस्थान मठ नांदणी जिला कोल्हापूर (महाराष्ट्र) में स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी नांदणी के अधिनेतृत्व में शुरु हैं। आचार्य विशुद्धसागरजी ससंघ का मंगल प्रवेश नांदणी नगरी में हुवा तब नांदणी में दिखी सामाजिक एकता की झलक। जैन साज के साथ मुस्लिम समाज, मराठा समाज, बौध्द, धनगर और वारकरी समाज के लोग आचार्य श्री के आगवानी के लिये शुद्ध मन के साथ आगे आये। गाजे बाजे के साथ पूज्य विशुद्ध सागरजी महाराज जी ससंघ को हजारों की संख्या में श्रद्धालु नगर के विभिन्न मार्गो से होते हुए जिनसेन मठ में लाये थे। यह नांदणी के इतिहास में पहला न भूतो न भविष्यती ऐसा मंगल प्रवेश था। अलग अलग समाज के लोग नांदणी नगर में एकसाथ आकर अनेकता में एकता का संदेश दे रहे थे।

दिगंबर जैन संत 12 महीने में आठ महीने तक विहार करते हैं और बरसात के समय चार महीने एक स्थान पर रुक जाते हैं। इसलिए उसे चौमासा या चातुर्मास कहते हैं। बारिश के समय जीवों की उत्पत्ति होती है। साथ ही हरियाली होती है। जैन संत जीवों की हिंसा न हो इसलिए एक जगह अपनी साधना करते हैं। प.पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ने अभि तक 1,25,000 कि.मि. पैदल विहार किया हैं। आचार्यश्री ने 250 ग्रंथों की रचना और 5000 नितीकाव्य का लेखन किया हैं। आचार्यश्री के सानिध्य में लागभग 146 पंचकल्याण प्रतिष्ठा महामहोत्सव सानंद संपन्न हुए हैं।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज जी सहित उनके 25 शिष्य नांदणी 2024 चातुर्मास-

श्रमण मुनि श्री सुव्रतसागर जी, विशेषता- हिंदी टिकाकार, उपाधी- साहित्याचार्य। श्रमण मुनि श्री अनुत्तरसागर जी, विशेषता- उग्र-उपवासी, उपाधी- तपस्वी। श्रमण मुनि श्री प्रणेय सागर जी, विशेषता- मंत्र आराधक, उपाधी- विनेय। श्रमण मुनि श्री प्रणव सागर जी, विशेषता- इतिहास मर्मज्ञ, उपाधी- सरल हृदय। श्रमण मुनि श्री सर्वार्थ सागर जी, विशेषता- विलक्षण चिंतक, मीडिया मास्टर, उपाधी-विचित्रात्मा। श्रमण मुनि श्री साम्य सागर जी, विशेषता- संस्कृत अध्ययन- अध्यापना में रुची, उपाधी- संस्कृत-प्रवीण। श्रमण मुनि श्री संकल्प सागर जी, विशेषता- ध्यान साधना प्रवीण, उपाधी- शुद्धात्म-ध्यानी। श्रमण मुनि श्री सद्भाव सागर जी, विशेषता- लेखन कार्य में रुची, उपाधी- श्रुतश्रमी। श्रमण मुनि श्री संजयंत सागर जी, विशेषता-योग विद्या प्रवीण, उपाधी-आत्म-बिहारी। श्रमण मुनि श्री यशोधर सागर जी, विशेषता- वैयावृत्ती निपुण, उपाधी-गुरू चरणानुरागी। श्रमण मुनि श्री यत्न सागर जी, विशेषता-सुरु-साधक, उपाधी-यत्नशील। श्रमण मुनि श्री निर्ग्रन्थ सागर जी, विशेषता-सरल हृदय, उपाधी-आदर्श शिष्य। श्रमण मुनि श्री निर्मोह सागर जी, विशेषता-प्रण-प्रिय साधक, उपाधी-श्रुत-निष्ठ। श्रमण मुनि श्री निसंग सागर जी, विशेषता- प्रज्ञावान, हसमुख, उपाधी-आत्मनुशासक। श्रमण मुनि श्री निर्विकल्प सागर जी, विशेषता-साधना-अनुरक्त, उपाधी-निर्लिप्त-साधक। श्रमण मुनि श्री जितेंद्र सागर जी, विशेषता-दृढता, विनम्रता, उपाधी-आत्म-चिंतक। श्रमण मुनि श्री सुभग सागर जी, विशेषता-विधी विधान निपुण, उपाधी-प्रतिष्ठा- प्रज्ञ। श्रमण मुनि श्री सिद्ध सागर जी, विशेषता-अध्ययनशील, उपाधी-स्वाध्याय-प्रिय। श्रमण मुनि श्री सिद्धार्थ सागर जी, विशेषता- ब्राम्ही लिपी अनुवादक, उपाधी-गुरुभक्त। श्रमण मुनि श्री सहर्ष सागर जी, विशेषता-दयाळू करुणावंत, उपाधी-प्रसन्नधिया। श्रमण मुनि श्री सत्यार्थ सागर जी, विशेषता-वैयवृत्ती में तत्पर, उपाधी-गुरू चरणानुगामी। श्रमण मुनि श्री सार्थक सागर जी, विशेषता-तप त्याग अनुरक्त, उपाधी-अंतेवासीन। श्रमण मुनि श्री सार्थ सागर जी, विशेषता- नितिज्ञ, उपाधी-सर्वांग सुंदर। श्रमण मुनि श्री समकित सागर जी, विशेषता- ज्ञान ध्यान प्रवीण, उपाधी- आत्म ध्यानी। श्रमण मुनि श्री सम्यक सागर जी, विशेषता- संघर्षशील, उपाधी- भक्त वत्सल।

सब धरती कागज करू, लेखनी सब वनराज। सात समुंद्र की मसि करु, गुरु गुंण लिखा न जाए।

कलश स्थापना : गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी के सुशिष्य चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का वर्षायोग चातुर्मास कलश स्थापना समारोह नांदणी में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

पावन चातुर्मास (वर्षायोग 2024) कलश स्थापना के शुभ दिन प्रमुख मंगल कलशों की बोली। नांदणी पहिला कलश- राजू पाटील माणगाव (नाशिक), नांदणी दुसरा कलश- राजू वळीवडे (वळीवडे कोल्हापूर), नांदणी तिसरा कलश- सौरभ भरत गाठ (हुपरी कोल्हापूर), नांदणी चौथा कलश- हेमचंद जी जैन परिवार इंदोर को कलश प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। पाद प्रक्षालन- मांगीलाल किशोर कुमार जी अनिवेष पहाड़े जी हैदराबाद।

महावीर आप्पासो कळत्रे (कोल्हापुर) परिवार को शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य मिला। इस अवसर पर हजारो श्रावक श्रविका उपस्थित थे।

-अभिषेक अशोक पाटील

ज्ञानयज्ञ में आहुति दें ! आओ कुछ नया करें !!

आज की तारीख में पंडित टोडरमल स्मारक नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। जैन तत्व ज्ञान के प्रचार प्रसार में इस संस्था का देश भर में कोई सानी नहीं है। कहने को तो यह संस्था इस युग के आध्यात्मिक संत पूज्य श्री कानजी स्वामी के विचारों को संसार के कोने - कोने में पहुंचने का कार्य कर रही है पर इसके साथ ही टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के माध्यम से जैनागम के निष्णात विद्वानों की अटूट श्रृंखला खड़ी कर ऐसा अनुपम कार्य किया है जिसने टोडरमल स्मारक की चमक को आशातीत बढ़ाकर जिनवाणी की सेवा के लिए फौज खड़ी करके रखदी है। इस महाविद्यालय का स्वप्न संजोया था तत्त्ववेत्ता डॉक्टर हुकमचंद जी भारिल्ल ने। वह भी ऐसे विकट समय में जब जैन विद्यालय विद्यार्थियों के अभाव में दम तोड़ रहे थे। डॉक्टर भारिल्ल जी की दूर दृष्टि ने इस महाविद्यालय के माध्यम से एक अलौकिक मार्ग प्रस्तुत किया जिसका अनुकरण करते हुए आज देश भर में ऐसे महाविद्यालयों की बाढ सी आ गई है।और तो और अब तो महिला वर्ग भी इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में आ गया है। डॉक्टर भारिल्ल जी स्वामी जी के नवरत्नों में देदीप्यमान नक्षत्र थे उन्होंने कानजी स्वामी के तत्व ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से गुलाबी नगरी जयपुर में टोडरमल स्मारक की स्थापना में सहयोग दिया और यहां से अनेक अनोखे उपक्रम चालू किये तथा उन्हें अपनी सूक्ष्म दृष्टि व पाण्डित्य से सजा- संवार कर पल्लवित व पुष्पित किया। इस संस्थान से अल्प मूल्य में सत साहित्य उपलब्ध कराना, परीक्षा बोर्ड व अर्हं पाठशाला जैसे उपक्रमों से देश भर में बच्चों को जैनागम का बोध कराना, वीतराग विज्ञान पत्रिका के माध्यम से पूज्य कानजी स्वामी का प्रदेय आम लोगों तक पहुंचाना, टोडरमल महाविद्यालय के माध्यम से अब तक सहस्त्राधिक विद्वान तैयार कर देश के कौने - कौने में अध्ययन की अलख जगाना, शिक्षण - प्रशिक्षण के द्वारा चारों अनुयोगों के पठन-पाठन की प्रेरणा देना; आदि ऐसे अनुकरणीय कार्य हैं जिनकी कोई मिसाल नहीं। अभी टोडरमल महाविद्यालय में लगभग 175 विद्यार्थी अध्यनरत हैं जो शिक्षा ग्रहण का शास्त्री विद्वान बनकर तैयार हो जाएंगे उनके आवास, भोजन व शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था इस भवन में की जाती है। भवन की विशाल इमारत भी अब छोटी पड़ने लगी है अत: कुछ नया करने का संकल्प लेकर युवा कार्यकारिणी आगे आ रही है। मूल भवन के पृष्ठ भाग में स्थित 4 मंजिली पुरानी इमारत को तोड़कर बहुमंजिले भव्य भवन का शिलान्यास 20-21 जुलाई को होना सुनिश्चित है। इसके बन जाने से विद्यार्थियों के आवास व्यवस्था सहज सुलभ लगभग दुगनी हो जाएगी।इस अद्भुत ज्ञान यज्ञ में आपकी आहुति से वह स्वप्न साकार हो उठेगा जिसे डा . हुकमचंद जी भारिल्ल ने देखा था। आप सभी विज्ञ महानुभाव शिलान्यास के क्षण देखकर रोमांचित हुए बिना नहीं रहेंगे। आइये इस सोच को साकार करने में आप भी भागीदारी सुनिश्चित करें और ऐसा कर गुजरें कि इतिहास आपको याद किये बिना न रहे। **-डा.अखिल बंसल, जयपुर**

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर तेजकरण का दोहरा रिकॉर्ड

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत के आध्यात्मिक सन्दर्भ में जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन उनके त्याग और तपस्या से अत्यंत प्रभावशाली था। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित विशेष आवरण और गुरुदेव के महाप्रयाण के समाचार पत्रों का विराट संकलन तैयार कर मोहला के ग्रैंडमास्टर ऑफ इंडियन फिलाटैली से सम्मानित तेजकरण जैन ने दोहरा रिकॉर्ड बना छत्तीसगढ़ का गौरव बढ़ाया है।

204 विशेष आवरण का रिकार्ड : जैन ने हमारे प्रतिनिधि को बताया कि किसी भी देश के डाक विभाग की अनुमति से ही किसी विशेष आयोजन या विशिष्ट व्यक्ति पर विशेष आ जीववरण का प्रकाशन किया जाता है। उल्लेखनीय है कि श्रमण संस्कृति के संवाहक दिगंबर जैनाचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ने 50 साल पहले 22 नवंबर 1972 को आचार्य पद ग्रहण किया था। देश भर के आचार्य श्री के अनुयायियों ने उनके आचार्य पदारोहण स्वर्ण जयंती वर्ष को अविस्मरणीय बनाने के लिए भारत के विभिन्न शहरों से 173 से अधिक अब तक कुल 204 विशेष आवरण जारी कराया है। विश्व इतिहास में किसी गैर राजनीतिज्ञ व्यक्ति पर पहली बार इतने अधिक विशेष आवरणों का प्रकाशन हुआ है।

महाप्रयाण के 609 अखबारों का संकलन : छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े जैन तीर्थ चंद्रगिरि डोंगरगढ़ में 18 फरवरी को आचार्य श्री ने समाधिपूर्वक अपनी देह त्याग दी। जैन समुदाय सहित अनेक लोग शोकाकुल हो गए। शोक समाचार प्रकाशन वाले भारत की 12 भाषाओं के 609 अखबार एकत्रित कर तेजकरण जैन ने एकल व्यक्ति मृत्यु वृतांत प्रकाशन अभिलेख का रिकार्ड भी अपने नाम कर लिया है।

रिकॉर्ड प्राप्त इन दोनो संकलन का उद्देश्य आचार्य श्री के जन उपकारी महान योगदान और महाप्रयाण को यादगार श्रद्धांजलि देना है।

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ने कहा- जैन धर्म आचार प्रधान धर्म है

श्रावक धर्म प्रधान कहा, जीवन में वरदान कहा।
दान और पूजा करना अहो आत्म सम्मान कहा।।
आगम चर्या ही, गृहीधर्म कहाये रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये।

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। जो धर्म के मार्ग पर चलता है वो अपने मार्ग में फूल बिछाता जाता है जो अधर्म के मार्ग पर चलता है वी अपने मार्ग में कॉटे बिछाता जाता है। जब तक वीतराग चारित्र की जीव धारण नहीं करता, तबतक पुन: पुन: लौटकर उसी मार्ग पर आना पड़ता है। अगर आप अधर्म का आश्रय लेते हैं तो पुन: जब उस मार्ग पर आयेंगे तो राह में काँटे प्राप्त होगे. दुख और प्रतिकूलताये प्राप्त होती हैं। और अगर आप धर्म मार्ग का आश्रय चमरते हैं तो पुन: इस मार्ग पर आने पर आपको फूल ही फूल राह में बिछे मिलेंगे। अर्थात आपकी पग ङ्क पग पर अनुकूलतायें एवं सफलतायें प्राप्त होगी उक्त उद्?गार परमपूज्य जिनागम पंथ प्रवर्तक आदर्श महाकवि भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराक ने कृष्णानगर जैन मंदिर में धर्म सभा को संबोधित करते हुये व्यक्त किये।

जैन कुल में जन्म लेना, सुन्दर, स्वस्थ शरीर का प्राप्त होना ये पूर्व के पुण्योदय से प्राप्त हुये हैं। अब आप इन अनुकूलताओं का कितना लाभ ले पा रहे हैं। ये चिन्तन का विषय है। जैन कुल में जन्म लेने के बाद श्रावक कुल में जन्म लेने के बाद श्रावक के

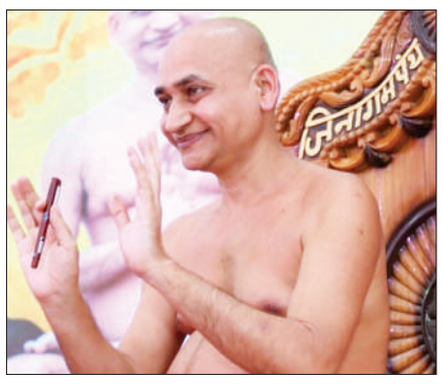

योग्य आवश्यक मूल कर्तव्य दान और पूजा करना इस कुल की, इस पर्याय की सार्थकता है। आचार्य श्री ने कहा कि जब सुबह आँख खुले तो सिर्फ परमात्मा का स्मरण हो, परमात्मा के प्रति धन्यता के भाव भरे हो कि प्रभु। आपके प्रसाद से आज मुझे पुन: जीवन प्राप्त हुआ है, मैं सर्वप्रथम अब आपका दर्शन पूजन अभिषेक करूँगा।'

अपने प्रयोजन के अनुसार ही हमारी क्रिया का फल प्राप्त होता है प्रयोजन अगर पाप का है तो शुभ क्रिया भी पाप का बंध कराती है और यदि प्रयोजन पुण्य का हो, तो अशुभ क्रिया भी पुण्य का कारण बनेगी 7 प्रतिदिन आचार्य जी के मंगल प्रवचन, प्रात: 8:00 बजे एवं गुरुभक्ति शाम 6:30 बजे।

यथार्थ की अनदेखी ही असंतोष को जन्म देती है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। जिसके पास कमी हो तो बात फिर भी समझ में आती है, लेकिन सब कुछ है फिर भी वह संतुष्ट नहीं आखिर ऐसा क्यों? यथार्थ की अनदेखी ही असंतोष को जन्म देती है, उपरोक्त उद्गार संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागरजी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य शंका समाधान एवं भावनायोग प्रणेता मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज ने सेल्फ सैटिस्फैक्शन विषय पर मंगल देशना देते हुये बुद्धबार की प्रात:कालीन प्रवचन सभा में कहे।

मुनि श्री ने कहा कि कामना और आकांक्षा की इस अंधी दौड़ का कोई अंत नहीं है उन्होंने कहा कि जीवन में संतुष्टी इन चार बातों के कारण नहीं आती- अभावोन्मुखी दृष्टि, यथार्थ का अनादर, आपेक्षा की उपेक्षा, इच्छानुलोभी प्रवत्ति क्रमश: सभी का ध्यान आकृषित करते हुये कहा कि अभावोन्मुखी दृष्टी के कारण ही परिवार में आपसी सामंजस्य का अभाव होता है, आज हम लोग देखते है कि समाज में एक दूसरे के प्रति समादर, सदभाव सहयोग का अभाव दिन प्रतिदिन बड़ता ही जा रहा है, पैसा, प्रभाव, और प्रतिष्ठा की होड़ ने आपसी सामंजस्य को लगभग समाप्त ही कर दिया है। जो है उसमे संतुष्ट नहीं और की होड़ में लगे हुये है यह एक अंधी दौड़ है, जिसका कोई अंत नहीं चाह की राह में आह और दाह ही दाह है, सब कुछ हे अच्छा घर है अच्छा परिवार है, अच्छा व्यापार है अच्छा कुल है, अच्छी प्रतिष्ठा है, फिर भी मन में संतुष्टि क्यों नहीं? कुछ और की चाह मन में लगी हुई है, मुनि श्री ने पूंछा कि संसार में है कोई ऐसा व्यक्ति है जो पूरी तरह से संतुष्ट हो? मोर और कोयल के बच्चों का उदाहरण देते हुये कहा कि मोर के बच्चे को कोयल की कूक अच्छी लगती है, तो वह अपनी मां से जिद्द करता है कि मां मुझे कोयल जैसी आबाज चाहिये बंही कोयल के बच्चे को मोर के पंख अच्छे लगते है, वह अपनी मां से जिद्द करती है कि मुझे मुझे मोर जैसे पंख चाहिये, संतुष्टि दौनों बच्चों को ही नहीं, मुनि श्री ने कहा कि यह एक अंत हीन दौड़ है जो कि अर्थी के साथ ही समाप्त होती है। उन्होंने अर्थी की परिभाषा बताते हुये कहा कि शरीर एक रथ है और आत्मा उसकी रथी जब रथी ही चला गया तो रथ किस काम का इसलिये इसलिये इसे अर्थी कहा गया है। प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया आगामी दिनों में 26 जुलाई से 28 जुलाई तक तीन दिवसीय बाल शिक्षण शिविर पाठशाला प्रेरक मुनि श्री निर्वेग सागर जी महाराज एवं मुनि श्री संधान सागर जी महाराज के सानिध्य में शंकासमाधान के पश्चात चलेगा कृपया अपने सभी बच्चों को इसका लाभ लें। प्रतिदिन सुवह के प्रवचन 8:25 से तथा सांयकाल6-20 से शंकासमाधान का कार्यक्रम पारस चैनल जिनवाणी चैनल एवं प्रमाणिक ऐप के माध्यम से लाईव प्रसारण होता है। **-अविनाश जैन**

बड़ी साधु वंदना में विनय की प्रधानता है : साध्वी सु मंगल प्रभा जी

दुर्ग (विश्व परिवार)। जय आनंद मधुकर रतन भवन बांदा तालाब दुर्ग में आध्यात्मिक वर्षावास में धर्म सभा को संबोधित करते हुए मधुकर मनोहर शिष्या साध्वी श्री सुमंगल प्रभा ने कहा आचार्य सम्राट जयमल जी महाराज द्वारा रचित बड़ी साधु वंदना के विषय पर चल रहा है इस वंदना में विनय की महत्ता पर सारी गर्भित चर्चा चल रही है। विनय सभी गुणों का आभूषण है। जैसे आकाश का आभूषण सूर्य है, कमलवन का आभूषण भ्रमर है वाणी का आभूषण सत्य है, वैभव का आभूषण दान है मन का भूषण निर्मलता, पवित्रता है सज्जन का मूषण सुभाषित है। इसी तरह सब गुणों का भूषण विनय है विनयशील व्यक्ति कुछ नहीं देकर भी प्रेम और विश्वास अर्जित कर लेता है. जबकि विनयहीन विशिष्ट पदार्थ देकर भी प्रेम को तोड़ देता है। उत्तराध्ययन सूत्र- 21 वें अध्ययन में सम्यक्त्व पराक्रम के 10-11वे सूत्र में प्रभु महावीर से गौतम स्वामी के संदर्भ में धर्म सभा में संबोधित करते हुए कहा प्राणी मात्र को वंदन करने से जीव को लाभ प्राप्त होता हे शुद्ध एवं पवित्र भाव से वंदन नमस्कार करने से उच्च गौत्र तीर्थकर नामकर्य का उपार्जन हो जाता है। भक्ति रस की एक अमर रचना है इसका पहला शब्द नमु यानी नमन प्रणाम होता है जिनके जीवन में विनय है वह विनम्रता से वह सभी को जीत लेता है विनम्रता जीवन का अनमोल गहना है सभी धर्म का मूल ही विनय है जिससे हम धर्म मानते हैं उसमें विनय का होना अत्यंत आवश्यक है।

दुनिया में सुख-दुख जैसा कुछ नहीं, मनुष्य ने परिस्थियों के अनुसार इसे परिभाषित किया : श्री विरागमुनि जी

आत्मस्पर्शी चातुर्मास 2024

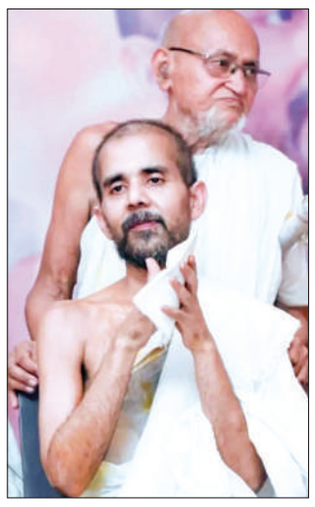

रायपुर (विश्व परिवार)। दादाबाड़ी में आत्मस्पर्शी चातुर्मास 2024 के पांचवें दिन बुधवार को दीर्घ तपस्वी श्री विरागमुनि जी ने कहा कि आपके अंदर जब आध्यात्मिक जाग जाएगा तो आपको केवल अपने आत्मा के कल्याण की ही सूझेगी ताकि आपका मोक्ष का रास्ता आसान हो जाए। आज सभी को एक कल्याण मित्र की आवश्यकता है और उसके मिलने पर हमें उसके प्रति समर्पित भी रहना होगा। जीवन में कल्याण मित्र के साथ हमें पारदर्शिता बनाए रखनी होगी। आपको कल्याण मित्र की हर बात पर हां बोलना होगा और वह जैसे कहें उसे बिना किसी संकोच के मानना होगा। जो आत्मा की क्वालिटी का डेवलपमेंट करें वैसा ही हमारा कल्याण मित्र होना चाहिए, जिसके सामने विचार करने की कोई जरूरत हमें नहीं पढ़नी चाहिए।

जगत में आज सुख-दुख जैसी कोई चीज नहीं है, मनुष्य ने परिस्थितियों के अनुसार इसे परिभाषित किया है। क्रिकेट खेलने वाले खिलाड़ी अपना रिकार्ड बनाने के लिए कड़ी धूप में दिनभर खेलने को तैयार होते हैं और ठीक इसके विपरित जब आपको किसी को पैसे देने जाना हो तो मौसम कितना भी आपके अनुकूल हो आपको बहुत तकलीफ होती है। आज कोई ग्राहक आपकी दुकान के सामने अपनी बाइक पार्क करके आपके बाजू वाली दुकान में चला जाता है तो आपको कितना दुख होता है। वही ग्राहक बगल की दुकान में लाखों का ऑर्डर दे दे तो आप ईर्ष्या की आग में जलकर राख हो जाएंगे। जब कुछ दिन बाद आपको पता चले कि जिस ग्राहक ने लाखों का समान का आर्डर दिया था वह कर्ज में चला गया, उसकी कंपनी ही डूब गई तो आपको कितना अच्छा लगेगा। आप तो सोचेंगे ही कि यह तो बहुत अच्छी बात है कि उसने मेरी दुकान से सामान नहीं खरीदा। यह सुख-दुख हमने अपने जीवन में खुद ही बना लिया है जबकि ऐसी कोई स्थिति नहीं है कि जब आपको सुख का आभास हो या आप पर दुख का पहाड़ टूट पड़े।

आज हम अपने मन के भरोसे रहते हैं, हमारा मन कभी भी कोई भी स्थिति निर्मित कर सकता है लेकिन अगर आप प्रेक्टिकल जीवन में मन के भरोसे रहोगे तो आपको दुख ही मिलेगा। इसके लिए हमें धर्म श्रवण करना होगा ताकि हम अपने मन को नियंत्रित कर सके। आज हमारा मन इतना पावरफुल हो गया है कि धर्म के रास्ते में यहां अंतराय खड़ा करता है। मन इतना ताकतवर हो चुका है कि हम कुछ भी कर सकते हैं अगर एक बार ठान लिया तो दुनिया की कोई ताकत आपको नहीं रोक पाएगी इसलिए हमें अपने मन को और ताकतवर बनाना है। हमें विवेक से काम लेना है और अपने पापों को कम करना है लेकिन हम ऐसा नहीं करते हैं। इसी क्रम में हम सांसारिक दुनिया में उलझे रहते हैं और धर्म की बात जब आती है तो हम एक तारीख सेट करते हैं कि हम इसके बाद यह पूजा करेंगे और हम इस ट्रिप से आने के बाद यह अनुष्ठान करवाएंगे। जब आपको गाड़ी, टीवी या एसी जैसी सुख सुविधा वाली मशीन खरीदनी होती है तो आप बहुत ज्यादा दिन इंतजार नहीं करते, जरूरत के हिसाब से खरीदते हैं लेकिन आज धर्म के क्षेत्र में अपने एक माइलस्टोन लगा रखा है। जब बाजार में आपकी दुकान पर कोई ग्राहक आता है तो आपको बाजार का शोर, आसपास चलने वाली गाड़ियों का शोर सुनाई नहीं देता है सिर्फ आपको ग्राहक की आवाज ही सुनाई देती है क्योंकि आपका लक्ष्य वही है। जबकि आप धर्म के लिए अलग से समय निकालकर मंदिर जाते हैं और वहां पर आप जिनवाणी का श्रवण नहीं कर पाते क्योंकि आपका लक्ष्य वह नहीं है। अपने धर्म को लक्ष्य नहीं बनाया है केवल एक घंटा समय बिताने के लिए आप मंदिर चले जाते हो।

"एक ईंट मेरी भी" अभियान

जयपुर में जहाँ एक और मूर्ति मोहल्ले में पाषाण और धातु के भगवान बनते हैं वहीं टोडरमल स्मारक में चैतन्य भगवान बनाये जाते हैं। विद्वानों की फैक्ट्री के नाम से प्रसिद्ध टोडरमल स्मारक समय की आवश्यकता को देखते हुए विद्वानों को बनाने की अपनी क्षमता दोगुनी करना चाहता है। इसके लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त 6 मंजिला नया भवन बनाने जा रहे हैं।

नवीन छात्रावास भवन निर्माण में सभी सहयोग कर सकें इसलिए 'एक ईंट मेरी भी' अभियान प्रारम्भ किया जा रहा है।

इस अभियान के अन्तर्गत 1 ईंट मात्र 2500/- की है चूकिं यह भवन 2 साल में पूरी तरह बनकर तैयार होगा तब तक (2 साल तक) आपको प्रतिमाह 1 ईंट (2500/-) विद्वानों के सृजन को दोगुना करने के इस पावन अभियान में देनी है।

तत्त्वज्ञान के इस महायज्ञ में एक आहूति आपकी ओर से अवश्य हो - ऐसा हमारा आग्रहपूर्ण अनुरोध है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 25 जुलाई 2024

संक्षिप्त समाचार

अवैध शराब बेचते पकड़ी गई महिला, 45 पौव्वा बरामद

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिले की डोंगरगांव थाना पुलिस ने ग्राम आरी में एक महिला को अवैध रूप से शराब का विक्रय करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने महिला के पास से 45 पौव्वा देशी प्लेन शराब बरामद किया है तथा महिला के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की है। बता दें कि पुलिस अधीक्षक राजनादगांव मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा पुलिस अनु. अधि. डोंगरगांव, दिलीप सिंह सिसोदिया राजनादगांव के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी डोंगरगांव ,निरीक्षक उपेन्द्र कुमार शाह के नेतृत्व मे थाना डोंगरगांव क्षेत्रों मे जुआ , शराब ,चोरी ,व अन्य गतिविधियों पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। इस कड़ी में डोंगरगांव थाने को सूचना मिली कि ग्राम आरी मे अवैध रूप से शराब बिक्री की जा रही है। शिकायत पर थाना प्रभारी उपेन्द्र कुमार के द्वारा पुलिस टीम गठित कर ग्राम आरी पहुंचकर आरोपिया माधुरी नेताम के घर के अंदर एक प्लास्टिक के डिब्बा मे अवैध रूप से छुपाकर रखे 45 नग देशी प्लेन शराब शोले छग. निर्मित को जब्त किया गया। जब्त शराब की कीमत 4020 रूपये आंकी गई है। मामले में पुलिस ने आरोपी महिला के खिलाफ धारा- 34(2) आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की है। पकड़ी गई महिला के खिलाफ पहले भी थाना डोंगरगांव में धारा 34 (1) के तहत अपराध पंजीबद्ध किया जा चुका है।

सूने मकान में चोरी करने वाले तीन चोर पकड़ाये

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले की सिहावा थाना पुलिस ने पिछले दिनों हिन्छापुर सांकरा में एक घर में हुई चोरी के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है तथा उनके पास से चोरी का सामान बरामद किया है। मिली जानकारी के अनुसार हिन्छापुर सांकरा निवासी नागेश्वर देवदास पिता उदय देवदास ने थाना में रिपोर्ट दर्ज कराया कि 18 जुलाई को वह अपने घर मे ताला लगाकर ड्यूटी पर चला गया तथा वहीं उसकी पत्नी भी ड्यूटी पर चली गई थी। तथा शाम करीबन 5 बजे के लगभग वापस घर आई तो देखा कि घर का सारा सामान बिखरा पड़ा था तथा आलमारी का लॉकर टुटा हुआ था एवं लॉकर के अंदर रखे हुए सोने चांदी के जेवरात एवं नगदी रकम को कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले गया था। मामले की रिपोर्ट पर थाना सिहावा मे धारा 331 (3),305 (ए), 3(5) बीएनसएस कायम कर विवेचना ने लिया गया। विवेचना दौरान तकनीकी साक्ष्य एवं मुखबिर सूचना के आधार पर थाना स्टॉफएवं सायबर सेल की संयुक्त टीम द्वारा नगरी पहुंच कर संदेही आकाश ध्रुव उर्फ माया पिता स्व. कृष्ण कुमार साहू निवासी जंगलपारा नगरी थाना नगरी, पियुष साहू पिता प्रेमशंकर साहू उम्र 20 वर्ष निवासी जंगलपारा नगरी तथा दीगेन्द्र किरन पिता अमृत लाल साहु उम्र 27 वर्ष निवासी लाईन पारा नगरी को हिरासत में लेकर पूछताछ किया गया तो आरोपियों ने अपना जुर्म स्वीकार करते हुए चोरी करना स्वीकार किया। जिसके बाद आरोयिों के बयान के आधार पर उनसे सोने एवं चांदी जेवरात कीमत 75हजार रूपय,एक नग मोटर सायकल तथा दो मोबाईल फोन जब्त किया गया। मामले में आरोपियो के खिलाफ धारा 331 (3),305 (ए), 3(5) बीएनसएस के अपराध दर्ज कर गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है।

जनदर्शन में कलेक्टर ने सुनी आम लोगों की समस्याएँ

बालोद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने आज संयुक्त जिला कार्यालय के जनदर्शन कक्ष में पहुँचे लोगों से मुलाकात कर उनके माँगों एवं समस्याओं को सुना। इस दौरान उन्होंने जनदर्शन में पहुँचे लोगों से बारी-बारी से मुलाकात कर उनके माँगों एवं समस्याओं के संबंध में जानकारी ली। श्री चन्द्रवाल ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को तलब कर आम जनता के माँगों एवं समस्याओं के निराकरण हेतु त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए। इस दौरान जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे एवं संयुक्त कलेक्टर श्री दरबारी राम ठाकुर ने भी आम लोगों के माँगों एवं समस्याओं को सुना। जनदर्शन में आज बालोद विकासखण्ड के ग्राम लाटाबोड निवासी श्रीमती सोनी साहू ने अपने खेत से बारिश की पानी निकासी की व्यवस्था करने तथा डौण्डीलोहारा विकासखण्ड की सिब्दी निवासी श्रीमती लता सिन्हा ने अपने नाम से राशन कार्ड बनाने एवं बगईकोन्हा निवासी श्री कबीरदास साहू ने अपने जमीन का बँटवारा करने की माँग की। गुण्डरदेही विकासखण्ड के ग्राम मिर्रीटोला निवासी श्री द्वारिका प्रसाद सिन्हा ने ग्राम मिर्रीटोला से गुजरने वाली राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक ×0 में पानी निकासी की व्यवस्था करने की मांग की। डौण्डीलोहारा विकासखण्ड के ग्राम पोपलाटोला के ग्रामीणों ने अपने ग्राम में प्राथमिक शाला भवन के निर्माण करने तथा डौण्डी विकासखण्ड के ग्राम कुसुमकसा निवासी श्री वीर सिंह ने बारिश से मकान क्षतिग्रस्त होने पर मुआवजा प्रदान करने की मांग की। लाटाबोड निवासी श्री सुंदर साहू एवं चिचबोड़ निवासी श्री लक्ष्मी नारायण ने अपने घर से बारिश की पानी निकासी करने की मांग की।

अनुपस्थित या कर्तव्य विमुख शासकीय सेवकों के विरूद्ध करें प्रभावी कार्यवाही : कलेक्टर

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विजय ने कहा कि शासन के निर्देशानुसार अनाधिकृत अनुपस्थित या कर्तव्य विमुख शासकीय सेवकों के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करें। उन्होंने जिले के सभी आहरण व संवितरण अधिकारियों को निर्देशित किया कि माह के तिथि 20 से 28 तक रेगुलर वेतन बिल कोषालय में जमा करें। शासकीय सेवकों के वेतन की सप्लीमेंट्री बिल कलेक्टर की अनुमति के बगैर जमा नहीं किया जाएगा। उन्होंने अनुपस्थित रहने वाले कर्मचारी या अन्य कारण से अवकाश पर रहने वाले शासकीय सेवकों के वेतन के सप्लीमेंट्री बिल जमा नहीं किए जाने के निर्देश दिए। कलेक्टर विजय मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक ले रहे थे। बैठक में

समय-सीमा के प्रकरणों, जन चौपाल, जन शिकायत के प्रकरण पर चर्चाकर संबंधित विभाग के अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने एकलव्य विद्यालय के लिए चिन्हांकित स्थानों के लिए संबंधित विभागों से अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, किसान क्रेडिट कार्ड, बीमा योजना के तहत् स्व-सहायता समूह के मृत व्यक्तियों के परिजनों को राशि दिलवाने, लखपति दीदी योजना का क्रियान्वयन, आधार बेस पेमेंट सिस्टम, ई पंजीकृत श्रमिकों का राशन कार्ड जारी करने में प्रगति, पीडीएस बारदाना संकलन की स्थिति, सांसद निधि, विधायक निधि के कार्यो की स्थिति, कौशल विकास के कार्य प्रशिक्षण, वित्तीय वर्ष के आधार पर अपूर्ण विकास कार्य की संबंधित एजेंसी वार समीक्षा कर प्रगति लाने के निर्देश दिए। विशेष केन्द्रीय सहायता अन्तर्गत स्वीकृत अपूर्ण कार्यो की प्रगति और सीएसआर मद के 2017-18, 18-19, 19-20, के विकास कार्यों का पूर्णता प्रमाण पत्र देने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने आरबीएसके चिरायु योजना के तहत् स्कूलों में स्क्रीनिंग करवाने में शिक्षा विभाग के अधिकारियों को आवश्यक सहयोग करने के निर्देश दिए। उन्होंने नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं हेतु जाति प्रमाण जारी करने का लक्ष्य का विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी से संज्ञान लिया।

निरीक्षक दीपक शर्मा ने अपनी जान की परवाह किए बगैर समुद्र की लहर में कूद कर बचाई एक महिला की जान

गोवा कैंडोलिम तट की घटना में अपनी साहस का परिचय देते हुए,मुंबई की महिला कल्पना को बचा लिया गया सुरक्षित

सर्व गुजराती समाज छ.ग.द्वारा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में रक्षित निरीक्षक श्री शर्मा का किया गया सम्मान

धमतरी(विश्व परिवार)। धमतरी पुलिस के रक्षित निरीक्षक दीपक शर्मा छुट्टी मनाने अपने परिवार के साथ गोवा गए थे। वहीं मुंबई में रहने वाले गुजराती परिवार के 50 लोगों का अमुलक ग्रुप से भी पुरूष एवं महिलाएं गोवा आए हुए थे। सभी 19 जुलाई को कैंडोलिम बिच में समुद्र तट पर घुमने के लिए पहुंचे थे। और जब इन लोग समुद्र में नहा रहे तो अचानक आए खतरनाक समुद्री लहर की चपेट में आ गये। दो महिलाएं,एक पुरुष समुद्र की गहराई की ओर खींचते चले गये। बचाव बचाव की आवाज सुनाई देते ही तट में खड़े धमतरी पुलिस छतीसगढ़ के रक्षित निरीक्षक दीपक शर्मा जिनकी गोद में 10 माह का बच्चा था ने बिना कोई देर किए अपनी पत्नी की गोद में बच्ची को देकर कूद गए। और अपनी जान की परवाह ना करते हुए गोवा के कैंडोलिम तट पर तीन लोगों की जान बचाने धमतरी के समुद्री लहर छलांग लगा दी जिसमें मुंबई की एक महिला की जान बचाई,जबकि दो लोगों को नहीं बचाया जा सका। इस दौरान स्वयं भी लहर की चपेट में आ गए थे, लेकिन साहस का परिचय देते हुए मुंबई की महिला कल्पना को बचा लिया। जबकि दो लोग पंकज दोषी एवं हर्षिता दोषी गहरे समुद्र में डूब गए। इस घटना से उक्त ग्रुप के साथ-साथ उनके इष्ट मित्र परिजनों में शोक की लहर दौड़ गई। एक महिला की जान बचाने के लिए धमतरी के रक्षित निरीक्षक की अदम्य साहस की वहां उपस्थित लोगों ने सलाम किया। समुद्री लहर में फंसे एक महिला को तो उन्होंने बचा लिया,लेकिन दो लोगों को ना बचा पाने का काफी अफ्सोस जाहिर किये। प्रदेश अध्यक्ष सर्व गुजराती समाज छ.ग.प्रीतेश गांधी , गुजराती समाज के कीर्ति शाह,योगेश गांधी,सुधीर गांधी,कमलेश गांधी,लख्खू भाई,राजेंद्र शर्मा,दिलीप सोनी,ने रक्षित निरीक्षक श्री दीपक शर्मा का सम्मान किया और कहा की इस जोखिम भरे लहर से बचाने में शर्मा जी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। पुलिस अधीक्षक आंजनेय वार्ष्णेय ने रक्षित निरीक्षक दीपक शर्मा की प्रशंसा करते हुए उन्हें इस साहसिक कार्य के शबासी भी दिये।

सडक़ पर आवारा मवेशियों के रोकथाम के लिए चलाएं अभियान - कलेक्टर

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने सडक़ पर मवेशियों के नियंत्रण के लिए अभियान चलाने के निर्देश दिये है।उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्ग के अंतर्गत मवेशियों की संख्या ज्यादा रहने वाले स्थानों का चिन्हांकन करने के निर्देश दिये है।इन स्थानों पर विशेष निगरानी रखकर सडक़ में घुमने वाले आवारा पशुओं को पकडक़र सुरक्षित नजदीकी गौठान या गौशाला में रखने के निर्देश दिये है।साथ ही सडक़ों पर खुले घुमने के लिए छोडऩे वाले पशु मालिकों पर नियमानुसार जुर्माने की भी कार्यवाही करने के निर्देश दिये।उन्होंने पशुपालन विभाग को सभी मवेशियों को रेडियम बेल्ट लगाने तथा टैगिंग करने के निर्देश दिये।कलेक्टर ने पशुओं को सडक़ पर नहीं छोडऩे के संबंध में ग्रामीणों को जागरूक भी करने के निर्देश दिये।इस कार्य के लिए नगरीय निकाय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नोडल एवं सहायक नोडल अधिकारी भी नियुक्त करने के निर्देश दिये।साथ ही जिला पंचायत, नगरीय निकाय,परिवहन,पीडब्ल्यूडी,एनएच,पुलिस, पीएमजीएसवाय एवं पशुपालन विभागों को समन्वय बनाकर आवारा पशुओं के रोकथाम के लिए कार्य करने के निर्देश दिये।कलेक्टर ने काऊकेचर की टीम बनाकर चिन्हांकित जगहों पर नियमित निगरानी करने के भी निर्देश दिये।साथ ही आवारा पशु पाये जाने पर तत्काल उन्हें नजदीकी गौशाला में भिजवाने का भी प्रबंध करने को कहा।

श्रीरामलला दर्शन के लिए जिले से 72 दर्शनार्थियों का दल हुआ रवाना

दल को हरी झंडी दिखाकर किया गया रवाना

कांकेर(विश्व परिवार)। राज्य शासन द्वारा शुरू की गई श्रीरामलला दर्शन योजना के अंतर्गत जिले के नागरिकों को अयोध्या धाम दर्शन का लाभ मिल रहा है। इसी क्रम में आज कलेक्टर श्री नीलेश महादेव क्षीरसागर एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा जिले के 72 दर्शनार्थियों को लेकर जा रही बसों को सुबह 07 बजे लाइवलीहुड कॉलेज कांकेर से हरी झंडी दिखाकर दुर्ग रेलवे स्टेशन के लिए रवाना किया गया। इस अवसर पर मत्स्य कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष भरत मटियारा, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री रामचरण कोर्राम, दिलीप जायसवाल तथा अन्य जनप्रतिनिधिगण सहित जिला पंचायत सीईओ एवं नोडल अधिकारी श्री सुमित अग्रवाल भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि जिले से श्रीरामलला दर्शन योजना के तहत दूसरे चरण की यात्रा के लिए लॉटरी के माध्यम से दर्शनार्थियों का चयन किया गया था, जिसे आज 02 अनुरक्षक के साथ 74 लोगों को रवाना किया गया। उल्लेखनीय है कि श्रीरामलला दर्शन के लिए जिले से आज दूसरा दल रवाना हुआ। इसके पहले एक दल 26 जून को रवाना हुआ था जो 30 जून को वापस लौट आया। सभी दर्शनार्थियों ने प्रदेश सरकार की इस पहल के लिए आभार व्यक्त किया था।

बजट में दल्लीराजहरा से जगदलपुर 233 किलोमीटर रेल लाइन के लिए राशि का प्रावधान स्वागत योग्य - मंत्री केदार कश्यप

जगदलपुर(विश्व परिवार)। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा आज बजट प्रस्तुत किया गया। बजट को लेकर छत्तीसगढ़ शासन के वनमंत्री केदार कश्यप ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल का यह पहला बजट देश के विकास को गति देने वाला बजट है । इस बजट में कृषि योजनाओं को और अधिक गति देने जो प्रावधान किए गए हैं। उक्त बातें प्रदेश के वन मंत्री केदार कश्यप ने अपनी बजट प्रतिक्रिया में कही हैं। वनमंत्री कश्यप ने

कहा कि देश की वित्त मंत्री की दूरगामी सोच ने बजट को सर्वस्पर्शी बनाया है। इस बजट में बस्तर संभाग की महत्वपूर्ण मांग दल्ली राजहरा से जगदलपुर 233 किलोमीटर रेल लाइन के लिए बजट राशि का प्रावधान किया गया है। यह हम सभी के लिए बड़ी खुशी की बात है ।इस बजट में कृषि ,शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास पर अधिक फोकस किया गया है । ग्रामीण विकास के लिए अधिक बजट का प्रावधान करके ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाएं बढ़ाने का प्रयास सराहनीय है। वनमंत्री केदार कश्यप ने कहा कि प्रधानमंत्री मुद्रा लोन की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख करने के प्रधानमंत्री का फैसला युवाओं को रोजगार देने को दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगा । उसी प्रकार प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अब 3 करोड़ और मकान बनाए जाने को बजट में शामिल करना गरीबों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। मंत्री केदार कश्यप ने बजट को लेकर बताया कि जनजातीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान की शुरुआत की जाएगी। इस योजना के तहत आकांक्षी जिलों एवं जनजातीय बहुल ग्रामों में जनजातीय परिवारों के पूर्ण कवरेज के लिए कदम उठाए जाएंगे। इससे 63 हजार गांवों में 5 करोड़ जनजातीय लोग लाभान्वित होंगे।

किरंदुल के डेम स्खलन प्रभावित क्षेत्र में पहुंचे कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक

सर्वे पश्चात दिया जायेगा मुआवजा, प्रभावितों को पहुंचाया गया मंगल भवन

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। दंतेवाड़ा जिले के किरंदुल शहरी क्षेत्र में दो दिनों पहले आए प्राकृतिक बाढ़ के कारण हुए नुकसान का जमीनी मुआयना करने के लिए कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी एवं पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय ने किरंदुल के स्खलन प्रभावित क्षेत्र का सघन दौरा किया। इस दौरे के दौरान कलेक्टर ने प्रभावित परिवारों से सीधे मुलाकात कर उनकी समस्याओं से अवगत होते हुए उसके निराकरण के लिए ठोस एवं त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश संबंधितों को दिए। इस दौरान कलेक्टर ने नुकसानी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मुख्य रूप से प्रभावित 162 परिवारों के लिए भोजन, अस्थायी आवास, दवाइयां एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को कहा। इसके अलावा मौसमी बारिश से

असामायिक आपदा से प्रभावित परिवारों को तत्काल राहत पहुचाने के लिए आर्थिक सहायता राशि उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने एनएमडीसी प्रबंधन के अधिकारियों को भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी के द्वारा चपेट में आए प्रभावित वार्डों विशेष तौर पर बंगाली कैंप तथा गाडर पुलिया क्षेत्र का जायजा लिया और वार्ड के क्षतिग्रस्त मकानों घरों के रहवासियों को हर संभव शासन द्वारा मदद करने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने कहा कि प्रशासन के एसडीएम, तहसीलदार, नगर पालिका के अधिकारी कर्मचारियों द्वारा क्षतिग्रस्त मकानों को सर्वे किया जा रहा है। और सर्वे करने के बाद शीध्र ही मुआवजा राशि प्रदान किया जायेगा। कलेक्टर ने कहा कि इस आपदा से प्रभावित लोगों के लिए मंगल भवन में ठहरने के लिए उचित व्यवस्थाएं भी की गई है। मौके पर उन्होंने स्थानीय लोगों की मांग पर वार्ड स्थित नाले को चौड़ा बनाने का आश्वासन भी दिया। इसके साथ ही उन्होंने राहत कार्य में जुटे मैदानी अमलों को अधिकारियों से सतत सम्पर्क बनाए रखने को कहा। इस दौरे के दौरान ही कलेक्टर ने राजस्व विभाग के साथ ही अन्य विभागों के अधिकारियों की बैठक भी ली एवं राहत तथा पुनर्वास के कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। जिला प्रशासन द्वारा प्रभावितों को किसी भी प्रकार की समस्या आने पर जिला स्तरीय बाढ़ आपदा नियंत्रण कक्ष के प्रभारी अधिकारी डिप्टी कलेक्टर श्री कमल किशोर के मोबाईल नंबर -7354637303 पर संपर्क करने की अपील भी की गई है। इस दौरान एसडीएम बचेली श्री विवेक चंद्रा सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर गुरूवार 25 जुलाई 2024

व्यापार समाचार

बजट को लेकर नोएडा में 20 हजार से ज्यादा एमएसएमई उद्यमी उत्साहित

नोएडा(एजेंसी)। मोदी सरकार 3.0 के पहले आम बजट को लेकर उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर के 20 हजार से ज्यादा एमएसएमई के उद्यमी काफी ज्यादा उत्साहित हैं। उनका मानना है कि इस बार का यह बजट आर्थिक विकास को और ज्यादा बढ़ावा देने के लिए होगा। इससे एमएसएमई को काफी फायदा मिलने की उम्मीद है। किसी भी देश के विकास को अगर बढ़ाना है तो एमएसएमई सेक्टर पर सरकार को ज्यादा ध्यान देना होगा। यही देश की रीढ़ होती है। गौतमबुद्ध नगर जिले में सिर्फ नोएडा में ही 13 से 14 हजार एमएसएमई इंडस्ट्रीज काम कर रही हैं। जिनमें कई हजारों लोगों का परिवार पलता है। इसके अलावा अगर ग्रेटर नोएडा को भी मिला लिया जाए तो जिले भर में 20 हजार से ज्यादा एमएसएमई इंडस्ट्री चल रही है। इसके साथ ही नोएडा, उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश में ओडीओपी प्रोडक्ट में अपैरल पार्क के नाम से मशहूर है। यहां पर कपड़ा उद्योग से जुड़ी कई फैक्ट्रियां हैं और देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी यहां से सप्लाई होती है। एमएसएमई उद्योग से जुड़े उद्योगपतियों को सबसे ज्यादा दिक्कतों का सामना बैंक के ब्याज दरों से करना पड़ता है। नोएडा में एमएसएमई इंडस्ट्रियल एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष सुरेंद्र सिंह नाहटा का कहना है कि एमएसएमई सेक्टर को सबसे ज्यादा दिक्कत बैंकों से होती है और वित्त मंत्रालय को इन बैंकों पर लगाम लगानी चाहिए। इसके इंटरेस्ट रेट को रेगुलराइज करना चाहिए।

बजट को लेकर टेक्सटाइल सेक्टर को काफी उम्मीदें

मुंबई(एजेंसी)। संसद में मंगलवार को आम बजट (बजट 2024) पेश किया जाएगा। देश की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बजट पेश करेंगी। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का यह पहला बजट है। बजट को लेकर टेक्सटाइल सेक्टर को काफी उम्मीदें हैं। हिंदुस्तान चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष सुशील गादियान ने बजट से उम्मीदें जताई हैं। उन्होंने कहा कि इस बजट से काफी उम्मीदें हैं। वर्तमान में कपड़ा उद्योग भारत का दूसरा सबसे बड़ा श्रम प्रधान उद्योग है। कृषि के बाद भारत में कपड़ा उद्योग सबसे ज्यादा लोगों को रोजगार देता है। सरकार से उम्मीद है कि कपड़ा उद्योग को ज्यादा से ज्यादा राहत दी जाएगी। उन्होंने कहा कि अगर सरकार कपड़ा उद्योग पर ध्यान दे तो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय व्यापार काफी हद तक बढ़ सकता है। भारत कपड़ा निर्यात में चीन, वियतनाम और श्रीलंका से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पा रहा है, क्योंकि यहां श्रम, बिजली और ब्याज दरें बहुत महंगी हैं। सरकार की नीति के कारण हम अपनी इच्छा के अनुसार निर्यात नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब तक सरकार इन सभी समस्याओं पर ध्यान नहीं देगी, तब तक हमारा निर्यात नहीं बढ़ेगा। सरकार को प्रोसेस हाउस में कपड़ों की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। घरेलू बाजार में मांग की तुलना में आपूर्ति बहुत अधिक है। भुगतान नहीं के कारण बहुत सारा माल बिक नहीं पाता। आज के समय में एमएसएमई सबसे बड़ा मुद्दा है। इस पर बहुत चर्चा हुई है। अगर सरकार एमएसएमई पर ध्यान देगी, तभी घरेलू बाजार चल पाएगा।

मेटा एआई अब हिंदी और अन्य भाषाओं में उपलब्ध है; अब अधिक रचनात्मक और स्मार्ट है

हम अपने ऐप्स और डिवाइस में Meta AI असिस्टेंट की पहुँच बढ़ा रहे हैं और नई सुविधाएं जोड़ रहे हैं ताकि आपको उत्तर देने, विचार करने और प्रेरणा मिल सके। Meta AI अब 22 देशों में उपलब्ध है, जिसमें अर्जेंटीना, चिली, कोलंबिया, इक्वाडोर, मैक्सिको, पेरू और कैमरून शामिल हैं। अब आप WhatsApp, Instagram, Messenger और Facebook पर Meta AI के साथ नई भाषाओं में भी बात कर सकते हैं। यह सुविधा अब हिंदी, रोमन हिंदी, फ्रेंच, जर्मन, इतालवी, पुर्तगाली, और स्पेनिश में उपलब्ध है और जल्द ही और भी भाषाएँ जोड़ी जाएंगी।

WhatsApp, Instagram, Messenger, Facebook ¥õÚU meta.ai पर Meta AI की मदद से लोग कम समय में ज्यादा काम कर पा रहे हैं, रचनात्मक विचारों को साकार कर रहे हैं और अपने ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं। Meta AI आपके हर काम में मदद करता है - सवालों के जवाब देने से लेकर प्रेरणा और मार्गदर्शन देने तक, जिससे आपकी दिनचर्या बेहतर बनती है और आपको एक भरोसेमंद रचनात्मक साथी मिलता है। यह तो सिर्फ शुरुआत है - हम आपके फीडबैक पर ध्यान दे रहे हैं और हर दो हफ्ते में Meta AI को अपडेट कर रहे हैं ताकि आपका अनुभव और बेहतर हो सके। हम तेजी से नई सुविधाएं जोड़ रहे हैं ताकि आप कुछ नया बना सकें, प्रेरित हो सकें और ज्यादा काम कर सकें।

कलर्स 'खतरों के खिलाड़ी 14' के साथ आपकी स्क्रीन पर चीखों से भरपूर छुट्टी लेकर आया है

मुंबई। किस्मत साहसी का साथ देती है, लेकिन रोमानिया में, नसीब निडर का साथ देगा! 'टूरिस्ट ट्रैप' की अपनी धारणा को फिर से रचने के लिए तैयार हो जाइए, क्योंकि कलर्स पहली बार रोमानिया में फेबिया फाइटर्स की अपनी टुकड़ी को ले जाकर छुट्टियों की स्क्रिप्ट को पुन: लिखते हुए, भारत के पसंदीदा स्टंट-आधारित शो ×स39;खतरों के खिलाड़ी×स39; का 14वां सीज़न पेश कर रहा है। 'रोमानिया में डर की नई कहानियांज' थीम के साथ, इस शो के प्रतियोगी चाहे जितनी भी साहसी तैयारियां कर लें लेकिन यह डरावनी छुट्टी निश्चित रूप से उन्हें हिलाकर रख देगी। इस संस्करण की सभी नवीनताओं के बीच, शो का एक पहलू नियत बना हुआ है, वह है ब्लॉकबस्टर फिल्ममेकर और अवॉर्ड विजेता टीवी होस्ट, रोहित शेट्टी का मेज़बान के रूप में अपनी भूमिका को दोहराना और अपने व्यापक अनुभव से डेयरडेविल्स को सलाह देना। एंडेमोल शाइन इंडिया द्वारा निर्मित, हुंडई की पेशकश, स्पेशल पार्टनर्स इंडिका ईज़ी हेयर कलर और विक्स, एसोसिएट पार्टनर्स स्मिथ एंड जोन्स पास्ता मसाला और अंबुजा सीमेंट, 'खतरों के खिलाड़ी 14' का प्रीमियर 27 जुलाई को होगा और उसके बाद हर शनिवार-रविवार रात 9:30 बजे प्रसारित होगा, केवल कलर्स पर। शुरुआत में, दर्शकों का भव्य स्वागत किया जाएगा।

मुख्य कोच आईपीएल में हो सकती है वापसी राहुल द्रविड़ की

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल टीम इंडिया के साथ टी20 विश्व कप के बाद खत्म हो गया है। अब वो एक बार फिर मुख्य कोच की भूमिका में आ सकते हैं, हालांकि इस बार वो आईपीएल टीम राजस्थान रॉयल्स की कमान संभालने वाले हैं। भारतीय टीम को टी20 विश्व कप 2024 में मुख्य कोच के रूप में सफलतापूर्वक जीत दिलाने के बाद राहुल द्रविड़ कथित तौर पर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में एक नए रोमांचक सफर की तैयारी कर रहे हैं। भारतीय टीम के मुख्य कोच के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त होने के बाद द्रविड़ से टी20 लीग में कई फ्रेंचाइजियों ने संपर्क किया। हाल ही में उनके केकेआर से भी जुड़ने की खबर आई थी। सूत्रों के मुताबिक, आईपीएल टीम राजस्थान रॉयल्स में बतौर मुख्य कोच राहुल द्रविड़ की वापसी हो सकती है। आरआर फ्रेंचाइजी इस संबंध में द्रविड़ से लगातार बातचीत कर रही है। भारत के मुख्य कोच की भूमिका के बाद राहुल द्रविड़ का पहला कार्यभार लगभग तय हो चुका है। द वॉल के नाम से मशहूर द्रविड़ इंडियन प्रीमियर लीग में वापसी करने के लिए तैयार है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि द्रविड़ का राजस्थान रॉयल्स के साथ मुख्य कोच के रूप में जुड़ना तय हो चुका है और जल्द ही आधिकारिक घोषणा होने वाली है। बता दें, द्रविड़ का राजस्थान रॉयल्स के साथ पुराना नाता रहा है। वह बतौर खिलाड़ी, कोच और मेंटर टीम के साथ काम कर चुके हैं। द्रविड़ 2011 में कप्तान के रूप में रॉयल्स में शामिल हुए और रिटायर होने से पहले तीन सीज़न तक खेले। 2014 में, उन्होंने फ्रेंचाइज़ी के मेंटर के रूप में पदभार संभाला। द्रविड़ ने अब तक इस बारे में कुछ नहीं कहा है। लेकिन भारत के टी20 विश्व कप जीतने के बाद बतौर कोच अपने आखिरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में द्रविड़ ने मज़ाक में कहा था कि अब वे बेरोजगार हैं और किसी भी ऑफर का स्वागत है।

बजट में आम आदमी को बड़ी राहत, इनकम टैक्स में हुई कटौती,3 लाख तक की इनकम पर कोई टैक्स नहीं

नई दिल्ली(एजेंसी)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की ओर से मंगलवार को बजट पेश किया गया। बजट में आम आदमी को बड़ी राहत दी गई। सरकार ने नई टैक्स रिजीम में पर्सनल इनकम टैक्स की दरों में कटौती की है। अब, नई टैक्स रिजीम के तहत 0 से 3 लाख रुपए तक की आय पर शून्य टैक्स लगेगा। 3 से 7 लाख रुपए तक की आय पर 5 प्रतिशत, 7 से 10 लाख रुपए तक की आय पर 10 प्रतिशत, 10 से 12 लाख रुपए तक की आय पर 15 प्रतिशत , 12 से 15 लाख रुपए तक की आय पर 20 प्रतिशत और 15 लाख रुपए से अधिक की आय पर 30 प्रतिशत टैक्स लगेगा। टैक्स में हुए इस बदलाव के बाद नौकरीपेशा लोग आसानी से 17,500 रुपये की टैक्स की बचत कर पाएंगे। पहले नई टैक्स रिजीम के तहत 0 से 3 लाख रुपए तक की आय पर शून्य टैक्स था। 3 से 6 लाख रुपए तक की आय पर 5 प्रतिशत, 6 से 9 लाख रुपए तक की आय पर 10 प्रतिशत, 9 से 12 लाख रुपए तक की आय पर 15 प्रतिशत, 12 से 15 लाख रुपए तक की आय पर 20 प्रतिशत और 15 लाख रुपए से अधिक की आय पर 30 प्रतिशत टैक्स था। टैक्स स्लैब में राहत देने के साथ सरकार ने नौकरीपेशा लोगों को मिलने वाली टैक्स छूट %स्टैंडर्ड डिडक्शन% में 50,000 रुपए की टैक्स छूट को बढ़ाकर 75,000 रुपए कर दिया है। बता दें कि केंद्र सरकार की ओर से पुरानी टैक्स रिजीम में किसी प्रकार का कोई भी बदलाव नहीं किया गया है।

अभिनव बिंद्रा को मिला आईओसी का सबसे बड़ा सम्मान 16 साल पहले ओलंपिक में जीता था गोल्ड

नईदिल्ली(एजेंसी)। अभिनव बिंद्रा की गिनती भारत के बेहतरीन प्लेयर्स में होती है। वह भारत के लिए निशानेबाजी में ओलंपिक गोल्ड मेडल जीतने वाले इकलौते भारतीय हैं। भारतीय निशानेबाज अभिनव बिंद्रा को ओलंपिक आंदोलन में उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी (आईओसी) ने 'ओलंपिक ऑर्डर' अवॉर्ड देने का फैसला किया है। भारत के खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने सोशल मीडिया पर इसकी घोषणा की। भारत के यूथ अफेयर्स और स्पोर्ट्स मिनिस्टर मनसुख मंडाविया ने 'ओलंपिक ऑर्डर' से सम्मानित होने पर अभिनव बिंद्रा को बधाई दी। उन्होंने 'एक्स' पर लिखा कि ओलंपिक

आंदोलन में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'ओलंपिक ऑर्डर से सम्मानित होने पर अभिनव बिंद्रा को बधाई। उनकी उपलब्धि हमें गौरवान्वित करती है और वह वास्तव में इसके योग्य है। उन्होंने निशानेबाजों और ओलंपिक में भाग लेने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया है। अवॉर्ड समारोह ओलंपिक के समापन से एक दिन पहले 10 अगस्त को पेरिस में 142वें आईओसी सेशन के दौरान आयोजित किया जाएगा। आईओसी अध्यक्ष ने 20 जुलाई को अभिनव बिंद्रा को संबोधित करते हुए एक पत्र में लिखा कि मुझे आपको सूचित करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि आईओसी कार्यकारी बोर्ड ने ओलंपिक आंदोलन में आपकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए आपको 'ओलंपिक ऑर्डर' से सम्मानित करने का फैसला किया है। ओलंपिक ऑर्डर' इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी का सर्वोच्च पुरस्कार है, जो ओलंपिक आंदोलन में विशिष्ट योगदान के लिए दिए जाते हैं। इसके लिए नामांकन ओलंपिक ऑर्डर समिति द्वारा प्रस्तावित किए जाते हैं और कार्यकारी बोर्ड द्वारा निर्णय लिया जाता है। इस अवॉर्ड की शुरुआत 1975 में हुई थी।

दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए ग्रीन एनर्जी को बजट में मिले पर्याप्त फंडिंग : एक्सपर्ट्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। बजट 2024-25 में सरकार को पर्यावरण और गवर्नेंस (ईएसजी) को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे दीर्घकालिक आर्थिक विकास और पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए स्थिर पहल की जा सके। जानकारों की ओर ये ये बातें कहीं गई हैं। बता दें, पिछले महीने वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) ने भी भारत में हो रहे एनर्जी ट्रांजिशन को स्वीकारा है। साथ ही कहा है कि भारत द्वारा प्राप्त किए गए परिणामों को दूसरी जगह पर भी अपनाया जा सकता है। ईवाई इंडिया में जलवायु परिवर्तन और स्थिरता सेवाओं में पार्टनर सौनक साहा ने कहा कि ग्रीन टेक्नोलॉजी के लिए पहल को बढ़ाना होगा, साथ ही कार्बन उत्सर्जन के लिए सख्त नियम बनाने होंगे। इसके साथ ही स्थिरता प्रदान करने वाले इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की फंडिंग को बढ़ाना होगा। साहा का कहना है कि हमें अपने एनर्जी और ट्रांसपोर्ट सेक्टर को डेकार्बोनाइज करना होगा। इससे हमें अन्य सेक्टर को डीकार्बनाइजेशन करने में मदद मिलेगी। इससे भारत को जलवायु को लेकर किए गए अपने वादे को पूरा करने में मदद मिलेगी। साथ ही स्थिरता के साथ विकास में स्वयं को एक लीडर के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी। सरकारी डेटा के मुताबिक, भारत ने वित्त वर्ष 2023-24 के बीच 18.48 गीगावाट रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता जोड़ी है, जो कि इससे पिछले वर्ष जोड़ी गई क्षमता 15.27 गीगावाट से 21 प्रतिशत अधिक है। क्रेड्यूस के संस्थापक शैलेन्द्र सिंह राव ने कहा कि बजट से उम्मीद है कि क्लीन एनर्जी प्रोजेक्ट्स जैसे सोलर, विंड, ई-मोबिलिटी और ग्रीन हाइड्रोजन को पर्याप्त फंडिंग मिलेगी।

भारत के खिलाफ घरेलू टी20 मैचों में श्रीलंका की कप्तानी करेंगे चरिथ असालंका

कोलंबो(एजेंसी)। भारत के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए चरिथ असालंका को श्रीलंका की कप्तानी सौंपी गई है। चयन समिति ने मंगलवार को तीन मैचों की सीरीज के लिए 16 सदस्यीय टी20 टीम की घोषणा की। टी20 मैच 27, 28 और 30 जुलाई को कैंडी के पल्लेकेल इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे। सदीरा समरविक्रमा और दिलशान मदुशंका को टीम से बाहर कर दिया गया है, जबकि चयनकर्ताओं ने उनकी जगह चामिंडू विक्रमसिंघे, बिनुरा फर्नांडो और अविष्का फर्नांडो को चुना है। अनुभवी दिनेश चांडीमल भी टीम में वापस आ गए हैं और फरवरी 2022 के बाद टी20 में वापसी करने के लिए तैयार हैं। भारत के खिलाफ यह सीरीज सनथ जयसूर्या के लिए भी उनका पहला असाइनमेंट है, जिन्होंने अंतरिम कोच के रूप में जिम्मेदारी संभाली है। जयसूर्या को इस महीने की शुरुआत में पूर्व कोच क्रिस सिल्वरवुड के इस्तीफे के बाद नियुक्त किया गया था। टी20 विश्व कप 2024 में खराब प्रदर्शन के बाद श्रीलंका की नजर वापसी पर होगी, जबकि टी20 विश्व चैंपियन भारत नए कोच और कप्तान के साथ अच्छी शुरुआत करना चाहेगा।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसल बीमा प्रदान करके, बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस बना रहा है छत्तीसगढ़ के किसानों को सशक्त

छत्तीसगढ़: भारत की प्रमुख प्राइवेट जनरल इंश्योरेंस कंपनी, बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस, छत्तीसगढ़ राज्य में खरीफ 2024 सीज़न के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के तहत फसलों के लिए बीमा की सुविधा प्रदान कर रही है. इस योजना के अंतर्गत बस्तर, बेमेतरा, बीजापुर, कोरिया, सारंगढ़- बिलाईगढ़, गरियाबंद, जांजगीर-चांपा, कबीरधाम, कांकेर, सक्ती, मोहला - मानपुर - अम्बागढ़ चौकी सहित कई जिलों में कवरेज प्रदान की जा रही है. इसके तहत धान (सिंचाई और गैर-सिंचाई वाला), मक्का, काला चना, अरहर दाल, हरी मूंग दाल, मूंगफली, सोयाबीन, कोडो, कुटकी और रागी जैसी विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए व्यापक बीमा प्रदान की जाएगी. इस पहल का उद्देश्य किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना, उनके नुकसानों को कम करना और कृषि क्षेत्र में नई पद्धतियों को बढ़ावा देना है. पीएमएफबीवाई स्कीम के माध्यम से, बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस का लक्ष्य, किसी भी अप्रत्याशित प्राकृतिक घटना के कारण फसल को होने वाले नुकसान के लिए किसानों को आर्थिक सहायता और कवरेज प्रदान करना है. योजना के लाभों में तूफान, बाढ़, सूखा और कीट हमले जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण उपज को होने वाले नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति देना शामिल है. अगर खराब मौसम के कारण बुआई नहीं हो पाती है, तो पॉलिसी इसके लिए बीमा राशि के 25त्न तक कवरेज प्रदान करती है. कटाई के बाद हुए नुकसान को भी इस फसल बीमा ऑफर के तहत कवर किया जाता है. इसके साथ ही, यह पॉलिसी स्थानीय आपदाओं, जैसे बाढ़, ओलावृष्टि, प्राकृतिक आग और बिजली के कारण खेतों को हुए नुकसान को भी कवर करती है. किसान लेटेस्ट आधार कार्ड, बैंक पासबुक और भूमि और फसल बुआई से संबंधित आवश्यक दस्तावेज़ प्रदान करके आसानी से फसल बीमा योजना का लाभ उठा सकते हैं. लोन लेने वाले किसानों को बीमा की सुविधा, उनको लोन देने वाले संस्थानों (बैंक और एनबीएफसी) द्वारा प्रदान की जाएगी, जबकि लोन न लेने वाले किसान अपनी फसलों का बीमा नज़दीकी बैंक शाखा, कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी), डाकघर, एआईडीई ऐप के माध्यम से अधिकृत एजेंट या एनसीआईपी पोर्टल (pmfby.gov.in पर किसान स्व-लॉग-इन सुविधा) के माध्यम से करा सकते हैं. इस योजना के तहत, किसानों को प्रीमियम के रूप में बीमा राशि के अधिकतम 2त्न का भुगतान करना होगा, जिससे उनके लिए फसल बीमा और भी सुलभ और किफायती बन जाएगी. यह घोषणा करते हुए, बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस में कृषि बिज़नेस के प्रमुख श्री आशीष अग्रवाल ने कहा, बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस में, हम देश के प्रति किसानों के अनूठे योगदान का सम्मान करते हैं. एमएफबीवाई योजना एक अच्छी पहल है, जिसे कुदरती नुकसान से ज़रूरी आर्थिक सुरक्षा प्रदान करके किसानों को सशक्त बनाने के लिए बनाया गया है. हमारी प्रतिबद्धता न केवल व्यापक कवरेज प्रदान करना है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि किसानों को पूरी प्रक्रिया के दौरान सही एवं पूरी जानकारी मिले और उनकी पूरी सहायता की जाए. हम किसानों को फसल बीमा योजना में पूरे उत्साह के साथ भाग लेने के लिए आमंत्रित करते हैं, जो उन्हें इन कठिन मौसमी समस्याओं का सामना करने के लिए आवश्यक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करेगी. यह पहल न केवल छत्तीसगढ़ के किसानों की आजीविका में सुधार करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, बल्कि राज्य के लिए सुदृढ़ कृषि क्षेत्र के निर्माण में भी योगदान करेगी. इस स्कीम के तहत, किसान स्थानीय आपदाओं और कटाई के बाद हुए फसल के नुकसान के लिए क्लेम कर सकते हैं. इसके लिए उन्हें बीमा कंपनी, बैंक, या स्थानीय कृषि अधिकारी को दुर्घटना के 72 घंटों की भीतर, क्लेम की सूचना देनी होगी. वे कृषि रक्षक पोर्टल हेल्पलाइन नंबर 14447, बजाज आलियांज़ फार्मिंत्र केयरिंगली योर्स ऐप, बजाज आलियांज़ के व्हॉट्सऐप चैट बॉट नंबर - किसान सुविधा (7030053232), एनसीआईपी पोर्टल, पीएमएफबीवाई ऐप या नज़दीकी कृषि या आईयू ऑफिस सहित विभिन्न माध्यमों से सूचित दे सकते हैं. फसल बीमा योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए, किसान आधिकारिक पीएमएफबीवाई वेबसाइट https://pmfby.gov.in पर जा सकते हैं,

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 25 जुलाई 2024

छत्तीसगढ़ विधानसभा आवासीय परिसर में आज होगा वृक्षारोपण

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय गुरुवार 25 जुलाई को दोपहर 1.30 बजे राजधानी रायपुर के विधानसभा आवासीय परिसर में होने वाले 'एक पेड़ मां के नाम' वृक्षारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह करेंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि उप मुख्यमंत्री अरूण साव एवं विजय शर्मा, मंत्री केदार कश्यप, रामविचार नेताम, दयाल दास बघेल, लखनलाल देवांगन, ओ.पी. चौधरी, श्याम बिहारी जायसवाल, श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, टंकराम वर्मा एवं विधानसभा नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत होंगे। इस मौके पर समस्त विधायकगण भी उपस्थित रहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

चेम्बर प्रतिनिधिमंडल ने शिवराज भंसाली से मुलाकात कर मुख्य चुनाव अधिकारी पद हेतु मनोनयन पत्र सौंपा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तम गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष- राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि दिनांक 23 जुलाई 2024 चेम्बर कार्यकारिणी समिति की बैठक में चेम्बर चुनाव-2024 को चुनाव संपन्न करवाने हेतु श्री शिवराज भंसाली जी को सर्वसम्मति से मुख्य चुनाव अधिकारी मनोनीत किया गया है। अमर पारवानी जी ने बताया कि चेम्बर चुनाव-2024 को चुनाव संपन्न करवाने हेतु श्री शिवराज भंसाली जी को मुख्य चुनाव अधिकारी मनोनीत किये जाने पर श्री भंसाली जी से मुलाकात कर उन्हें मनोनयन पत्र दिया गया। इस अवसर पर चेम्बर सलाहकार मगेलाल मालू, संजय रावत, प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, मनमोहन अग्रवाल, उपाध्यक्ष सुरेश भंसाली, मंत्री-जितेन्द्र गोलछा जैन, जयराम कुकरेजा, प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

राज्य वित्त सेवा के अधिकारियों का तबादला

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ शासन ने विभिन्न विभागों में पदस्थ राज्य वित्त सेवा के अधिकारियों के तबादला आदेश जारी किया है। जारी आदेश के अनुसार 6 अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से उनके नए पदस्थापनाओं पर भेजा गया है। सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से जारी आदेश के अनुसार डॉ. अखिलेश कुमार सिंह नगर निगम भिलाई में वित्त नियंत्रक, संचालक पेंशन एवं भविष्य निधि, इंद्रावती भवन, नवा रायपुर से अस्थायी रूप से अपर सचिव, वित्त विभाग, मंत्रालय में नियुक्त किया गया है। आनंद मिश्रा ङ्क संयुक्त संचालक (वित्त), छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल, नवा रायपुर से उप सचिव, वित्त विभाग, मंत्रालय में स्थानांतरित हुए हैं। राजशेखर शर्मा ङ्क वित्त अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मंडल, रायपुर को उप सचिव, वित्त विभाग, मंत्रालय में पदस्थ किया गया है। बदन सिंह ठाकुर ङ्कउप संचालक (वित्त), संचालनालय खेल एवं युवा कल्याण, इंद्रावती भवन, नवा रायपुर को अवर सचिव, वित्त विभाग, मंत्रालय में नियुक्त किया गया है। राजीव कुमार झाड़े ङ्क मुख्य लेखा अधिकारी, छत्तीसगढ़ राज्य अंत्यावसायी वित्त एवं विकास निगम, नवा रायपुर को अवर सचिव, वित्त विभाग, मंत्रालय में नियुक्त किया गया है। सलिल साहू ङ्क सहायक संचालक, संचालनालय कोष, लेखा एवं पेंशन (आडिट प्रकोष्ठ), इंद्रावती भवन, नवा रायपुर को विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, वित्त विभाग, मंत्रालय में नियुक्त किया गया है।

बजट 2024-25 में छत्तीसगढ़ राज्य में रेल विकास के लिए 6922 करोड़ रुपये का प्रावधान

औद्योगिक विकास को बढ़ावा, मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी को सक्षम बनाने पर जोर, उच्च घनत्व वाले नेटवर्क की भीड़भाड़ को कम करना एवं संरक्षा के साथ रेल यात्रियों के यात्रा अनुभव को और बेहतर बनाना

केंद्रीय रेलमंत्री अश्वनी वैष्णव द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रेसवार्ता

रायपुर (विश्व परिवार)। 2024-25 का बजट दिनांक 23 जुलाई 2024 को संसद में पेश किया गया था। इसी परिपेक्ष्य में रेलवे में चल रही विभिन्न परियोजनाओं, नई परियोजनाओं, कार्यों एवं मदों के लिए बजट का प्रावधान किया गया है। रेलवे के लिए जारी की गई बजट प्रावधान में मुख्यत: औद्योगिक विकास को बढ़ावा, उच्च घनत्व वाले नेटवर्क की भीड़भाड़ को कम करना एवं मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी को सक्षम बनाने पर ज़ोर दिया गया है।

इसी तारतम्य में आज रेलमंत्री श्री अश्वनी वैष्णव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रेसवार्ता को संबोधित कर रेलवे के लिए जारी की गई बजट प्रावधान की जानकारी दी। इस दौरान बिलासपुर मुख्यालय, रायपुर एवं नागपुर मण्डल कार्यालय स्थित सभाकक्ष में बड़ी संख्या में स्थानीय पत्रकारगण उपस्थित हुए।

छत्तीसगढ़ राज्य में रेल विकास के लिए 6922 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जो कि वर्ष 2009 से 2014 के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य के लिए आबंटित औसत 311 करोड़ रुपये से 22 गुना अधिक है। वर्ष 2009 से 2014 के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य में औसत 6 किलोमीटर प्रतिवर्ष रेल लाइन के निर्माण किए गए, जबकि 2014 से 2024 के दौरान इससे 17 गुना अधिक औसत 100 किलोमीटर प्रतिवर्ष रेल लाइन के निर्माण किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य में रेल लाइन का शत प्रतिशत विद्युतीकरण किया गया है। वर्ष 2014 से 2024 के दौरान 31 किलोमीटर प्रतिवर्ष रेल लाइनों का विद्युतीकरण किया गया है।

छत्तीसगढ़ राज्य में 37018 करोड़ रुपए लागत से 2731 किलोमीटर की 25 नई रेल लाइन परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य के 32 स्टेशनों का विकास किया जा रहा है, जिनमें अकलतरा, अंबिकापुर, बैकुंठपुर रोड, बालोद, बाराद्वार, बिल्हा, भानुप्रतापपुर, भाटापारा, भिलाई, भिलाई नगर, भिलाई पावर हाउस, बिलासपुर, चांपा, दल्लीराजहरा, डोंगरगढ़, दुर्ग, हथबंध, जगदलपुर, जांजगीर नैला, कोरबा, महासमुंद, मंदिर हसौद, मरौदा, निपनिया, पेंड्रा रोड, रायगढ़, रायपुर जंक्शन, राज नांदगांव, सरोना, तिल्दा-नेवरा, उरकुरा एवं उसलापुर स्टेशन शामिल है। आगे उन्होने बताया कि वर्ष 2014 से अब तक छत्तीसगढ़ राज्य में 141 रेल ओवर ब्रिज और अंडर ब्रिज का निर्माण किया गया है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में लाइनों की क्षमता बढ़ाने के लिए दोहरीकरण, तिहरीकरण एवं चौथी लाइन के कार्य वृहद रूप से किए जा रहे है। पिछले वित्तीय वर्ष में, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में 143 किलोमीटर नए सेक्शन (133.3 किलोमीटर मल्टी-ट्रैकिंग, 3.8 किमी नई लाइनें और 6 किलोमीटर गेज परिवर्तन) का काम पूरा किया था, जिसमें बिलासपुर-उसलापुर आरओआर फ्लाईओवर का निर्माण किया गया। वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए कुल 421 किमी का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें 224 किमी मल्टी-ट्रैकिंग, 20 किमी नई लाइनें और 177 किमी गेज परिवर्तन शामिल है।

पिछले वित्तीय वर्ष 2023-24 में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में 13 फुट ओवर ब्रिज और 09 हाई लेवल प्लेटफॉर्म का निर्माण पूरा किया गया। इस वित्तीय वर्ष में अब तक 01 फूट ओवरब्रिज का कार्य पूरा किया गया है। विभिन्न स्टेशनों पर 25 लिफ्ट और 14 एस्केलेटर की सुविधा उपलब्ध है और 04 एस्केलेटर और 09 लिफ्ट लगाने का कार्य प्रगति पर है।

आपका एक प्रयास किसी के चेहरों पर मुस्कान ला सकती है, उनके दु:ख को कम कर सकती है

रायपुर (विश्व परिवार)। आज पंडरिया विधायक भावना दीदी के एक प्रयास से ग्राम सेमरहा के बच्चों के चेहरों पर मुस्कान आई है। आज ग्राम सेमरहा के बच्चों ने भावना दीदी के साथ विधानसभा में वहां की कार्यवाही देखी। इसके साथ ही उन्होंने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी, विधानसभा अध्यक्ष डॉ.रमन सिंह जी, उपमुख्यमंत्री श्री अरुण साव जी, कैबिनेट मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल जी एवं लखनलाल देवांगन से भी मुलकात की।

विधानसभा के बाद उन सभी बच्चों ने रायपुर भ्रमण किया और मैग्नेटो मॉल में गेम्स जोन में विभिन्न प्रकार के गेम्स खेलें, भोजन किया और भावना दीदी द्वारा उन्हें शॉपिंग भी कराई गई। इसके बाद सभी बच्चों का भावना दीदी के निज निवास में आगमन हुआ जहाँ उन्होंने सपरिवार उनका स्वागत किया एवं भेंट कर बातचीत की। एक वह समय था जब उस हादसे का दु:ख बच्चों के मन में था लेकिन आज भावना दीदी के इस प्रयास से उन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान और उनके आँखों में एक नई उम्मीद दिखी है। जिस भावना और अपनत्व के साथ उन सभी बच्चों को अपने उज्वल भविष्य के लिए भावना दीदी द्वारा प्रेरित किया जा रहा है उसके लिए भावना दीदी को साधुवाद। एक जनप्रतिनिधि ऐसा ही होना चाहिए जो सबके सुख-दु:ख में उनके साथ खड़ा रहे।

रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने लोकसभा में रेलवे से जुड़े मुद्दे उठाए

सांसद बृजमोहन अग्रवाल के सवालों पर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जानकारी दी

छत्तीसगढ़ में 100 प्रतिशत रेल लाइन का विद्युतीकरण किया जा चुका है

बृजमोहन अग्रवाल के अमृत भारत स्टेशन योजना में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग पर रेल मंत्री ने दी जानकारी

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान रेलवे से जुड़े मुद्दे उठाए। उन्होंने रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव से रेल मंत्रालय की 100 प्रतिशत विद्युतीकरण की पहल की राज्य-वार स्थिति पर सवाल पूछा था। जिस पर रेल मंत्री ने लिखित में उत्तर दिया है कि, छत्तीसगढ़ समेत 20 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में बड़ी लाइन नेटवर्क का 100 फीसदी विद्युतीकरण कर लिया गया है।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने सवाल भारतीय रेल में पर्यावरण अनुकूल इंधन और ऊर्जा के नए स्रोतों का विस्तार करने में भारतीय रेलवे वैकल्पिक ईंधन संगठन (आईआरओएएफ) द्वारा की गई प्रगति की जानकारी मांगी थी। जिसपर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि, भारतीय रेल में आईजारओएएफ की स्थापना वैकल्पिक ईंधन की खोज के लिए की गई थी। इससे कर्षण के लिए मिश्रित बायो-डीजल का उपयोग करने तथा डीजल के स्थान पर आंशिक रूप से सीएनजी और एलएनजी के उपयोग को प्रोत्साहन मिला है। कर्षण के लिए डीजल इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट (डेमू) रेक पर हाइ?ड्रोजन ईंधन सेल के रेट्रो-फिटमेंट के लिए एक प्रायोगिक परियोजना भी शुरू की गई है। जिसकी शुरुवाती कार्य को उत्तर रेलवे द्वारा निगरानी की जा रही हैं।

इसके अलावा अमृत भारत स्टेशन योजना में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के सवाल पर रेल मंत्री ने जवाब दिया है कि, अमृत भारत स्टेशन योजना में निधियों की उपलब्धता और मौजूदा परिसंपत्तियों की स्थिति के अनुसार स्थायी और पर्यावरण अनुकूल समाधान की ओर क्रमिक बदलाव की परिकल्पना की गई है जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग शामिल है।

कलिंगा विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भक्त माता कर्मा कॉलेज के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

रायपुर (विश्व परिवार)। कलिंगा विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक रुचि को बढ़ावा देने और बढ़ाने के लिए 24 जुलाई 2024 (बुधवार) को भक्त माता कर्मा कॉलेज, समोदा, रायपुर के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता दोनों संस्थानों के बीच शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक औपचारिक साझेदारी की शुरुआत को चिह्नित करेगा।

भक्त माता कर्मा कॉलेज की प्राचार्य डॉ. निशा दुबे और कलिंगा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. संदीप गांधी ने भक्त माता कर्मा कॉलेज से वाणिज्य विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. मुक्ता मल्होत्रा, राजनीति विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर कु. धनेश्वरी कोसले और कलिंगा विश्वविद्यालय के वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय की विभागाध्यक्ष डॉ. शिंकी के. पांडे, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय की सहायक प्रोफेसर डॉ. दीप्ति पटनायक, कला एवं मानविकी संकाय की डीन डॉ. शिल्पी भट्टाचार्य और वनस्पति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दीपा बिस्वास की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

इस समझौता ज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य शैक्षणिक और शैक्षिक गतिविधियों में आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा देना है। समझौता ज्ञापन में दोनों संस्थानों के बीच छात्रों और संकाय सदस्यों की गतिशीलता को सुविधाजनक बनाने के लिए विनिमय कार्यक्रमों की स्थापना की रूपरेखा दी गई है। इस पहल का उद्देश्य शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना और विविध शिक्षण अवसर प्रदान करना है। कलिंगा विश्वविद्यालय और भक्त माता कर्मा कॉलेज आपसी हित के विभिन्न क्षेत्रों में शोध परियोजनाओं पर सहयोग करेंगे। साझेदारी का उद्देश्य प्रभावशाली शोध परिणाम उत्पन्न करने के लिए प्रत्येक संस्थान की ताकत का लाभ उठाना है।

कलिंगा विश्वविद्यालय मध्य भारत का एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान है। नवाचार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए, विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा B+ मान्यता प्रदान की गई है। यह छत्तीसगढ़ का एकमात्र निजी विश्वविद्यालय है, जिसे वर्ष 2022 और 2023 में शीर्ष 101-150 विश्वविद्यालयों के बैंड में NIRF रैंकिंग में शामिल किया गया है। नेतृत्व शक्ति के विकास के साथ जिम्मेदार नागरिकों की भावना विकसित करने के लिए छात्रों में वैश्विक मानदंडों के अनुसार नवाचार को शामिल करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बहु-विषयक अनुसंधान-केंद्रित शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है।

प्रो. कृपा शंकर चौबे ने कहा- समस्या का समाधान ही शोध है

पत्रकारिता विश्वविद्यालय में अनुसंधान का भारतीय दृष्टिकोण पर संवाद कार्यक्रम आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय में अनुसंधान का भारतीय दृष्टिकोण पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. कृपा शंकर चौबे अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने कहा कि भारत में शोध की प्राचीन परंपरा है। अनुसंधान का भारतीय दृष्टिकोण सिद्धांत एवं दर्शन पर आधारित है। समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक विधियों की सहायता से समाधान प्राप्त करना ही शोध है। उन्होंने कहा कि शोध समस्या का समाधान है एवं शोधार्थी को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर शोध करना चाहिए। उन्होंने शोध के तीन रूपों को बताया जिनमें मौलिक, व्यावहारिक एवं क्रियात्मक अनुसंधान प्रमुख रूप में हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का संदेश ही शब्द का अर्थानुवाद, भावानुवाद है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा में भारतबोध को प्रतिस्थापित करने का प्रयास है। साथ ही भारत की ज्ञान परंपरा को विकसित करने का प्रयास है, जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान को आगे लाना है। उन्होंने आगे कहा कि पत्रकारिता केवल खबरें लिखना नहीं, अपितु जीवन की चेतना है। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे लाने की आवश्यकता है। वास्तव में बेतार की खोज सर जगदीश चंद्र बसु द्वारा की गई थी। वैश्विक हितों को देखते हुए पश्चिमी देशों ने भारत के ज्ञान को पीछे धकेलने का प्रयास किया है। अब समय आ गया है कि जब हम विकसित भारत की संकल्पना के साथ भारत के ज्ञान को वैश्विक पटल पर रख सकते हैं।

कार्यक्रम के संयोजक प्रभारी कुलसचिव डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शोध पर विशेष बल दिया गया है। विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत इस वर्ष से स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

कार्यक्रम में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष पंकज नयन पाण्डेय, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र मोहंती, विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष मंडावी, समाजकार्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र शर्मा, आईटी विभाग के अध्यक्ष शैलेंद्र खंडेलवाल, उपकुलसचिव सौरभ शर्मा, डॉ. शाहिद अली, चंद्रशेखर शिवहरे समेत विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दैनिक विश्व परिवार से जुड़ें...

छत्तीसगढ़ के सबसे विश्वसनीय दैनिक समाचार पत्र एवं वेबसाइट ''**दैनिक विश्व परिवार**'' से जुड़े और पाए अपनी खबरों को प्रकाशित कराने अवसर।

''**दैनिक विश्व परिवार**'' दे रहा है सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में युवा एवं प्रतिभावान पत्रकारों को मौका अपने जिले की हर खबर को प्रमुखता से प्रकाशित कराने का अवसर।

साथ ही छत्तीसगढ़ के समस्त जिले, विधानसभा, ब्लॉक स्तर पर रिपोर्टरों और विज्ञापन प्रतिनिधि की आवश्यकता है। अपनी खबरों को ''**दैनिक विश्व परिवार**'' के माध्यम से जनता तक पहुंचाए। हमसे जुड़ने के लिए निचे दिए गए नंबर पर करे अपनी खबरे साजा।

सम्पर्क : 99810-93065, 62662-63552

गटर का ढक्कन नहीं था, रहवासियों के एक कॉल से हो गया समस्या का निराकरण

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला प्रशासन द्वारा विगत दिनों शुरू किए गए जनसमस्या निवारण कॉल सेंटर में कबीर नगर फेस वन के रहवासी श्री सक्षम कुमार ने गटर का ढक्कन नहीं होने से कोई अनहोनी न हो इसके मद्देनजर जिला प्रशासन के कॉल सेंटर में फोन घुमाया। इसके तुरंत बाद शिकायत दर्ज कर निगम के अधिकारियों को तुरंत जानकारी दी गई। इसके तत्पश्चात निगम के कर्मचारी मौके के लिए रवाना हुए।गटर के मुहाने पर चेम्बर लगाया गया। इस त्वरित कार्य की नागरिकों ने सराहाना की और धन्यवाद दिया।

सर्वोच्च जैन तीर्थ सम्मेद शिखर जी की पवित्रता के लिए विश्व जैन संगठन ने सौंपा राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, केंद्रीय वन मंत्रालय और झारखंड रेजिडेंट कमिश्नर को ज्ञापन

रायपुर (विश्व परिवार)। झारखंड में 20 जैन तीर्थंकरों की मोक्षस्थल शिखर जी पर 19 जुलाई को झारखंड मुख्यमंत्री द्वारा बलि के लिए चार बकरों की पूजा करते हुए की वीडियो और पूजा के बाद बकरों को बलि देते हुए की फोटो वायरल होने पर समस्त जैन समाज में हुआ रोष व्याप्त। संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने सौंपा आज 24 जुलाई को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, केंद्रीय वन मंत्रालय और झारखंड गवर्नर को ज्ञापन

विश्व जैन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय जैन ने केंद्र सरकार और झारखंड राज्यपाल से सम्मेद शिखर जी तीर्थराज पर बलि जैसा हिंसक कार्य करने वाले दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही और भविष्य में जैन तीर्थराज पर पुनरावृति न किए जाने और पर्वतराज पर वाहन संचालन व अवैध निर्माण, अतिक्रमण पर रोक और अन्य प्रमुख अजैन तीर्थों के समान यात्री पंजीकरण, पुलिस व वन विभाग चेक पोस्ट, सामान जांच हेतु स्कैनर, कैमरे, चिकित्सा सुविधा आदि की केंद्र सरकार और झारखंड राज्यपाल से मांग की। श्री संजय जैन ने बताया कि श्री सम्मेद शिखर जी की पवित्रता के लिए वर्ष 2022 - 23 में संगठन द्वारा गजट के विरोध में समस्त समाज और संस्थाओं के सहयोग किए गए देशव्यापी अनशन आंदोलन के बाद 5 जनवरी 2023 को केंद्रीय वन मंत्रालय द्वारा निर्देश जारी किए गए थे, जिसका पालन करवाना झारखंड सरकार का कार्य है और झारखंड सरकार द्वारा भी 22 अक्टूबर 2018, 10 मई 2022, 21 दिसंबर 2022 और 5 जनवरी 2023 को जारी पत्रों में पारसनाथ पर्वतराज को जैनों का विश्व प्रसिद्ध जैन तीर्थंकरों की पवित्र मोक्षस्थल तीर्थस्थल मानते हुए इसकी पवित्रता अक्षुण्ण रखने की प्रतिबद्धता जताई थी लेकिन ऐसे पवित्र तीर्थ पर बलि जैसा हिंसक कार्य करना और करवाना दुखद, असहनीय और कानूनी रूप से दंडनीय है। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यश जैन और कोषाध्यक्ष मयंक जैन ने कहा कि जैन समाज और प्रकृति की पूजा करने वाले मधुबन व आसपास के क्षेत्र के समस्त आदिवासी बंधु वर्षों से एक दूसरे की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते आए है, सदैव करते रहेंगे और किसी को भी तीर्थराज पर अगामी झारखंड चुनाव में राजनीति नहीं करने देंगे। प्रतिनिधिमंडल में संगठन की महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजिका रुचि जैन, प्रचार मंत्री प्रदीप जैन, मीडिया प्रभारी आकाश जैन, सम्मानित सदस्य अशोक जैन प्रिया एनक्लेव, अनुज जैन, नोएडा से राहुल जैन, युवा प्रकोष्ठ से देवेश जैन और अन्य सदस्यों ने कार्यवाही की मांग की। -आकाश जैन

खारुन नदी लबालब, सेल्फी लेने वालों की लगी भीड़

रायपुर (विसं)। पिछले दो दिन से लगातार हो रही बारिश के बाद अब खारुन नदी भी लबालब हो गई है। बारिश होने से मौसम भी खुशनुमा हो गया है। इस कारण रायपुर की खारून नदी के महादेव घाट पर खुशनुमा मौसम में लबालब नदी के साथ सेल्फी लेने वालों की भीड़ भी जुटने लगी है।

कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
कानों की रिशेपिंग

जन्मजात, दुर्घटना या अन्य कारणों से कटे या टेढ़े-मेढ़े कानों की रिशेपिंग
पचपेड़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न Food Licence
इन्कम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354